श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 8 अगस्त 2020 मूल्य : 20 रु.

धनावंशी महासभा की आवश्यकता

धनाजी महाराज की गुरु परम्परा

धनावंशी सम्प्रदाय

धनावंश का कड़वा सच

सभी धन्नावंशी समाज को
जय श्री गुरूदेव धन्ना जी महाराज की ।

धनावंशी स्वामी समाज

को

हार्दिक शुभकामनाएं

GANGA DAS VEISHNAW
B.A (H) M.A., B.ED, LLB

SAMPADA REAL ESTATE
Main DPS Circle, Pal Bye-Pass,
JODHPUR (Raj.)
Mobile : +91 94144 40880

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 8 अगस्त 2020 मूल्य : 20/- रुपये

म्हारै ठाकुरजी री पूजा हरदम करता रहस्यां जी ।
म्हारै गुरूजी री परसादी सिर पर धरता रहस्यां जी ।।

अन्तरा

1 म्हे तन सूं सेवा मन सूं सुमिरन करता रहस्यां जी।
थांरी लीला गुण रा भजन कीरतन गांता रहस्यां जी ।।
2 थांरी आज्ञा सारू धर्म पंथ पग धरता रहस्यां जी।
म्हे सरतां सांतर पाप करम सूं टळता रहस्यां जी।।
3 जैसो सुख दुःख थे भेजोला वैसो भुळता रहस्यां जी।
थारै भगतां मांहीं थांरी चर्चा करता रहस्यां जी।।
4 थांरी गीता और रामायण चित में धरता रहस्यां जी।
थारै संतां री सत्संग री वाणी सुणता रहस्यां जी।।
5 थारै दरसण खातर बाटडली म्हे जोंता रहस्यां जी।
थांरा चरण कमल म्हे आंसूडां सूं धोंता रहस्यां जी।।
6 सब घट चेतन ज्योति निराली निरखत रहस्यां जी ।
थांरा गरीब दास सब धन्नावंस में हरखित रहस्यां जी।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-
तो अब क्या करे धनावंश/04
* समाचार-/05
* धनाजी महाराज की गुरु परम्परा/06
* आलेख-
रामानुज/07
धनावंश का कड़वा सच/09
धनावंशी सम्प्रदाय/11
सनकादि कुमार/17
संकीर्तन से समाधि/18
* परिचर्चा : धनावंशी महासभा की आवश्यकता/19
* भजन : गुरुदेव धनाजी का/27
* आपके पत्र-आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

तो अब क्या करे धनावंश?

एक अजीब सी गताघम में फसा हुआ है--धनावंश। एक पढे लिखे और युवा धनावंशी से पूछा जाए कि तुम किस जाति से हो तो वह इतना तो सहजता से बता सकता है कि वह--धनावंशी है। बाकी अपनी जाति से सम्बन्धित अगले एक भी सवाल का उत्तर वह शायद ही दे पाए। क्योंकि अपनी जाति और पंथ से सम्बन्धित दूसरी बातें उसके दादा-ताऊ-चाचा-बड़े भाई ने कभी नहीं बतायी। घर में- समूह में बैठकर अपनी जाति के बारे में कभी कोई चर्चा भी नहीं हुयी। ऐसे सन्नाटे में दो तीन वर्षों में कुछ शब्द घर के बुजुर्गों के मध्य चर्चा का विषय बनने लगे हैं --वे शब्द हैं--धनाजी--पंथ प्रवर्तक--पंथ गुरु--महंत--परिव्राजक--महासभा आदि-आदि। एक धार्मिक वैष्णव पंथ होने के नाते ये शब्द धनावंश के लिए अपरिचित तो नहीं होने चाहिए थे, पर हो गये। जब धनावंश भी अन्य स्वामी पंथों की तरह है तो उपरोक्त संज्ञाओं से धनावंशी कब तक अपरिचित रहे और क्यों रहे? इन सब बातों पर चिंतन करने को विवादास्पद बनाना तो नितांत अज्ञानता सूचक है। पांच शताब्दी से धनावंशी हैं हम। किन्तु अगर ऊपर जिन संज्ञाओं के जिक्र से हम कतराते रहे, तो गारंटी से संवत 1532 में जिस जाति को हमारे पूर्वज धारित करते थे पुन: उसी में रूपांतरित हो जाएंगे। अगर आप अपनी वर्तमान और भविष्य की पीढी को सजग--धर्मनिष्ठ--गरिमामय जाति के रूप में देखना चाहते हैं तो उपरोक्त सभी संज्ञाओं पर अतिशीघ्र चिंतन करना प्रारंभ करें। यह कर्तव्य सबका है। हर सजग धनावंशी को इस दिशा में सक्रिय हो जाना चाहिए।

ऊंची नौकरियां पानेवाले हमारे युवा हजारों कंटम्पोरेरी सवालों के उत्तर बेशक जानते होंगे पर धनावंश के सम्बन्ध में कितना जानते हैं--कुछ कहा नहीं जा सकता।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

धनावंश की परम्पराओं को जानें

धनावंशी समाज के प्यारे भाइयों ।

अगर धनावंश धार्मिक पंथ है, तो आपको अब से ही पंथ की निर्मिति को और निर्माण काल की परम्पराओं को समझना होगा। अगर आप जरा से भी समझदार हैं तो मेरी बातों को राग-द्वेष परे रखकर समझने की चेष्टा करें। धनावंश को समझने का प्रयत्न मैंने आज से छब्बीस वर्ष पहले प्रारम्भ किया था। कहां जाऊं--कैसे जानूं जैसा प्रश्न मेरे सामने था और मैं लगातार छह महीने आर्कव्हाइज जाता रहा। हालांकि मैटर बहुत कम मिला। क्योंकि था ही कम। फिर ढूंढने का सिलसिला प्रारम्भ किया। न जाने कहां कहां भटकता रहा-यह लम्बी गाथा है। धुआंकलां से लेकर गंगानगर तक स्थिति बहुत विचलित करने वाली मिली। इन पच्चीस वर्षों में हमारी पंथीय समझ सुधरने की बजाय दिनोंदिन बिगड़ी ही है। पंथ की परम्पराओं से हटते जाने का हमारा फैसला दुखदाई है।

आजकल हम चिंता करते हैं कि आधे धनावंशी धनाजी को नहीं मानते हैं। केवल धनाजी ही नहीं हम धनावंशी सम्प्रदाय की किसी बात को नहीं मानते हैं। चलो धनाजी को नहीं मानते हैं तो कोई बात नहीं है। हमने अपना राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय संगठन बनाना भी जरूरी नहीं समझा। धनावंश को छोड़कर हर जाति के संगठन हैं।

सच्ची बात तो यह है हम अपने समाज को बोझ जैसा मानते हैं । ऐसे मानते हैं जैसे यह एक मुसीबत हैं।

वक्त दिखता नहीं पर बहुत कुछ दिखा देता है।

डॉ. बी.एल. स्वामी ने दी मरीज को नई जिंदगी

बीकानेर। डॉक्टर को भगवान का दूसरा रूप यूं ही नहीं माना जाता है क्योंकि हर मरीज को इस बात का विश्वास होता है कि वो मरीजों को मौत के मुँह से बाहर निकाल लाते हैं या फिर एक नई जिंदगी दे सकते है। ऐसा ही एक मामला बीकानेर में सामने आया है।

आयुष्मान हार्ट केयर सेंटर हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. बी.एल. स्वामी ने लकवे के मरीज के गले की नस के एक गुर्दे की बार्ये नस में स्टंट डालकर जान बचाई। डॉ. स्वामी ने बताया कि गले की नस बायें केरोटिड नस में 70 प्रतिशत ब्लॉक थी साथ ही उसमें फोड़ा भी था। जिससे वहां खून का थक्का बनकर दिमाग में जाने से विपरीत दायें तरफ लकवा मार गया था। जिसे पुन: लकवा मारने की भी काफी संभावना थी। जिसे स्पाइडर केरोटिड फिल्टर स्टंट लगाकर कवर करके पुन: लकवा मारने की संभावना को खत्म किया है। साथ ही 240-146 बीपी होने की वजह से ब्रेन हेमरेज की भी काफी संभावना थी। जिसे बायें साईड के गुर्दे की नस में स्टंट डालकर ठीक किया। अब बीपी 150-90 हैं। जिससे अगले सप्ताह तक पूर्णतया ठीक होने की संभावना है। ऐसा दुर्लभ कार्य बीकानेर संभाग में पहली बार हुआ है।

धनावंशी समाज के 34 होनहारों का सम्मान

मानासर स्थित श्री धनावंशी स्वामी समाज समित के तत्वावधान में संचालित छात्रावास परिसर में देवाराम स्वामी की अध्यक्षता में आमसभा व पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। बैठक का शुभारम्भ अध्यक्ष स मंत्री रामनिवास स्वामी ने किया। इस दौरान प्रतिवेदन पेश किया। इसके बाद कोषाध्यक्ष राधेश्याम गोदारा ने वार्षिक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। बैठक में समाज के 34 प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। जिन्हें 500 रुपये नगद पारितोषिक व प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया। बैठक में नरेन्द्र कुमार जाखेड़ा, प्रेमदास खिंयाला, श्रवणदास निंबी, जगदीश गुणपालिया ने विचार व्यक्त किए। इस दौरान प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए एक शिक्षण कोष का गठन करने, छात्रावास की खाली जमीन पर निर्माण करवाने तथा महिला छात्रावास का निर्माण करवाने का प्रस्ताव भी लिया गया।

समिति की बैठक में प्रेमदास ने समाज के ऐतिहासिक लेखन श्री धनाजी महाराज के शोध के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखा। इस दौरान सामाजिक कुरीतियों के मृत्यु भोज पर राज्य सरकार के निर्देशों की पालना करने पर चर्चा की गई। अंत में देवाराम स्वामी ने सभी का आभार जताया।

वैरागी से हमारी इज्जत थी। राजाओं को भली प्रकार पता था कि धनावंशी भगत धनाजी जाट के अनुयायी हैं। राजाओं को भली प्रकार यह भी पता था कि धनावंशी/ विश्नोई/ जसनाथी आध्यात्मिक पंथ हैं, जो जाटों से रूपान्तरित जातियां हैं--फिर भी तीनों जातियों को बड़ी बडी जमीनें और दूसरे सम्मान दिए।

इंसान तो हर घर में पैदा होते हैं पर इंसानियत कहीं कहीं पैदा होती है।

जिनको धनाजी के सम्बन्ध में संशय है--उन्हें धनावंश की यह गुरु परम्परा अवश्य जाननी चाहिए। सौ वर्ष पहले महंत इसे जानते थे पर अब के महंत अपने पंथ की गुरु परम्परा को भूल गए। धनावंश के इतिहास की चाहत रखनेवाले बंधुओं को भी इसे दिलचस्पी से पढना चाहिए। धनावंशी स्वामियों ने मुझे प्रेरित किया कि मैं उन्हें ऐसी प्रामाणिक प्राचीन सामग्री प्रदान करूं-जिससे उनका यह भ्रम मिटे कि धनावंश हजारों वर्ष प्राचीन नहीं है। पीछे से एक पूरी परम्परा चली आई है। जो भगवान नारायण से शुरु होती है। और धनाजी महाराज हमें भी इस परम्परा में शामिल करते हैं। हमारा उपकार करते हैं।

श्री धनाजी महाराज की गुरू परम्परा

श्रीनारायण प्रथम गुरु तिनके शिष्य श्रीदेवी। तिनके विष्वकसेनजी शिष्य भये हरिसेव ।।
तिनके श्रीशठकोप मुनि जगत उद्धारण हेतु। प्रगट भये अवतार ले भवसागर के सेतु ।।
तिनके शिष्य श्रीनाथ मुनि प्रगट भये जग मांहि। राम मंत्र उपदेश करि मुक्त किए सब कांहि ।।
भये पुण्डरीकाक्ष पुनि तासु भजन की सींव। राम मिश्र तिनके भये मुक्त किए बहु जीव ।।
यामुन मुनि तिनके भये जीवन को गति दीन्ह। पूर्ण मुनि तिनके भये शिष्य भजन रसलीन ।।
श्रीरामानुज तिनके भये सो शेषा अवतार। राम मंत्र उपदेश करि किए सकल भवपार ।।
पुनि तिनके गोविंद भे भट्टारक पुनि जान। तिनके श्री वेदांतिजी सकल गुणन की खान ।।
तिनके श्री कलिजीत भये तिनके कृष्णाचार्य। रहस्य अष्टदश प्रकट किए कलि मंह पुनि लोकार्य ।।
तिनके शिष्य शैलेषजी वरबरमुनि पुनि शेष। अष्ट गादी थापन कर दीन्हो भल उपदेश ।।
आचारी तिनके भये पुरुषोत्तम यह नाम। जो कोऊ शरणागत भये तिनको दियो हरि नाम ।।
देवाचारज शिष्य भये तिनके भजन प्रमान। शिष्यन को हरि भक्ति दे मुक्त दिए करि दान ।।
हरियाचारज शिष्य भये तिनके सब जग जान। भये राघवानंद पुनि तिनके वे थे भजन सुजान ।।
श्री रघुवर अवतार ले भल प्रगटे रामानंद। कलिमंह जे मतिमंद अति मुक्त किए नर वृन्द ।।
तिनके शिष्य द्वादश भये द्वादश भानू समान। निज विज्ञान प्रकाश करि नाश कियो अज्ञान ।।
प्रथम अनंतानंद भे सुखानंद सुखधाम। भये सुरसुरानंद पुनि भावानंद सुनाम ।।
अरू नरहरियानंद पुनि सैन भक्त रैदासु। पीपा भये कबीर पुनि धना नाम है जासु ।।
रानी भयी पदमावती भइ सुरसरि इक वाम। स्वामी रामानंद के शिष्यन के ये नाम ।।
करि विचार तिन बांधियो राम भजन दृढ सेतु। भवसागर दुस्तर अगम जीव उधारन हेतु ।।

विचारों से आजाद रहे, पर संस्कारों से हमेशा जुड़े रहें।

रामानुज

रामानुज का महत्त्व इसी बात में है कि उन्होंने पूर्ववर्ती आचार्यों के मत के लिए एक सुनिश्चित दार्शनिक भित्ति तैयार कर दी। शंकर की भांति उन्होंने भी अपने दृष्टिकोण के समर्थन के लिए वेदान्त-सूत्रों और गीता पर महत्त्वपूर्ण भाष्य एवं टीका लिखी।

भारत के सांस्कृतिक स्वरूप निर्माण में उत्तर की तरह दक्षिण ने भी बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। विशेषकर बौद्ध मत के पर्यावसान के अनन्तर ज्ञान अथवा भक्तिमूलक जो अनेक धार्मिक लहरें मध्ययुग के उत्तरकाल में इस देश में उठी, उनका मूल उद्‌गम स्थान दक्षिण भारत ही था। इस युग में दक्षिण ने एक बाद एक अनेक महापुरुष उत्पन्न किए, जिनके द्वारा प्रवर्तित विचारधाराओं की इस देश के जन-मस्तिष्क पर गहरी छाप अंकित हुई। महापुरुषों की इस दिव्य परम्परा का मानों उद्‌घाटन करते हुए सबसे पहले आठवीं सदी में आए आचार्य शंकर, जिन्होंने वेदान्त मूलक अद्वैतवाद की पताका फहराकर इस देश के धार्मिक आँगन में न केवल बौद्ध मत के ही पैर सदा के लिए उखाड़ दिए, प्रत्युत स्वयं हिन्दू-धर्म के भी विभिन्न सम्प्रदायों के ढेरे-तंबुओं को झकझोरकर एक नूतन धार्मिक क्रान्ति प्रस्तुत कर दी। उनके बाद ग्यारहवीं सदी में हुए आचार्य रामानुज, जिन्होंने शंकर के अद्वैतवाद का वैष्णव दृष्टिकोण से संशोधन कर उस विशिष्टाद्वैती भक्तिधारा का प्रवर्तन किया, जिसके द्वारा अद्वैतवाद की भित्ति पर खड़े रहकर ही सगुण ब्रह्म की उपासना करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। यह क्रम यहीं आकर समाप्त न हो गया। बारहवीं शती में पुन: मध्व नामक एक और आचार्य पैदा हुए, जिन्होंने रामानुज से भी एक कदम और आगे बढ़कर शंकर के अद्वैतवाद को चुनौती देते हुए विशुद्ध द्वैतवाद का प्रवर्तन किया। तद्‌नंतर पंद्रहवी सदा के आरंभ में आए वल्लभाचार्य, जिनका भक्तिमार्ग दक्षिण ही के एक अन्य पूर्ववर्त्ती आचार्य विष्णुस्वामी के विचारों का विकसित रूप था। भारतीय दर्शन के क्षेत्र में वल्लभ का यह मत शुद्धाद्वैत के नाम से प्रसिद्ध है। उपर्युक्त तीनों महान आचार्य तो दक्षिण की उपज थे ही, इनके अतिरिक्त निम्बार्क नामक अन्य एक आचार्य भी वहीं हुए, जिनके द्वारा प्रवर्तित मत सनकादि सम्प्रदाय के नाम से मशहूर हुआ। इन सभी सम्प्रदायों के दार्शनिक मतों में यद्यपि भेद है, फिर भी इस बात में इन सबका एक मत है कि आचार्य शंकर द्वारा प्रस्तुत किया गया निर्गुण ब्रह्म का प्रतिपादन करनेवाला विशुद्ध अद्वैतवाद उन्हें स्वीकृत नहीं। वस्तुत: इन सबका प्रादुर्भाव शंकर के मत के प्रति प्रतिक्रिया के ही फलस्वरूप हुआ था। शंकर के मत में जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन होने के कारण सगुण ईश्वर की भक्ति अथवा

बड़प्पन वह गुण है, जो पद से नहीं संस्कारों से प्राप्त होता है।

अवतारवाद की धारणा के लिए कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी। अतएव प्राचीन भागवत धर्म के अनुयायी वैष्णवों के लिए इस अद्वैतवाद के विरुद्ध, जिसे उन्होंने मायावाद के नाम से पुकारना शुरु किया था, आंदोलन मचाना और अपने मत विशेष की पुष्टि के लिए नवीन दार्शनिक भूमिका तैयार आवश्यक हो गया। एक बात और थी। शंकर अद्वैतवादी विचारधारा सामान्य जन-मस्तिष्क द्वारा ग्राह्य न थी-वह वस्तुत: ज्ञानियों की वस्तु थी। साधारण नर-नारी तो अब भी उस ईश्वर को टटोलते थे, जो उन पर दया करता, आपदा के समय आकर उनकी रक्षा करता तथा जिसके चरणों में अपने आपको डालकर अपने दु:ख दैन्य से छुटकारा पा लेते। जन-साधारण की इस भावना ने ही ज्ञान के बजाय भक्तिप्रधान धर्म की मांग प्रबल की। इस मांग की पूर्ति करने के लिए ही रामानुज ने शंकर के अद्वैतवाद को प्राचीन भागवत धर्म के साथ संयुक्त कर विशिष्टाद्वैत नामक उस दार्शनिक धारा को जन्म दिया, जिसमें जीवात्मा, जगत् और ब्रह्म मूलत: तो एक ही रहे, किन्तु कार्यरूप में एक दूसरे से भिन्न तथा विशिष्ट गुणों से युक्त माने जाने लगे। रामानुज ने ज्ञान और कर्म दोनों को भक्ति का ही उपादान बताया और इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर से साक्षात्कार करने का सबसे उपयुक्त मार्ग भक्ति ही है। रामानुज दक्षिण के नामालवार आदि बारह आलवार वैष्णव भक्तों और नाथमुनि, यामुनाचार्य आदि आचार्यों की सुप्रसिद्ध परम्परा में पैदा हुए थे। अतएव यह कहना सही नहीं है कि रामानुज ही दक्षिण में वैष्णवधर्म की भक्तिधारा के आदि प्रवर्तक थे-वस्तुत: उनके विशिष्टाद्वैत-सम्बंधी विचारों की भी नींव उनके पहले यामुनाचार्य द्वारा पड़ चुकी थी। इन्हीं यामुनाचार्य की एक प्रपौत्री से रामानुज का जन्म हुआ था और उन्हीं की परम्परा में आगे चलकर वह श्रीरंगम् में प्रस्थापित आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए थे। रामानुज का महत्त्व इसी बात में है कि उन्होंने पूर्ववर्ती आचार्यों के मत के लिए एक सुनिश्चित दार्शनिक भित्ति तैयार कर दी। शंकर की भांति उन्होंने भी अपने दृष्टिकोण के समर्थन के लिए वेदान्त-सूत्रों और गीता पर महत्त्वपूर्ण भाष्य एवं टीका लिखी। उनका यह भाष्य श्रीभाष्य के नाम से प्रख्यात है। इसके अतिरिक्त नामालवारकृत प्रसिद्ध तिरुवोई-मोली नामक ग्रंथ पर एक प्राणाणिक टीका तैयार कराने का भी श्रेय रामानुज को ही है। किंतु उन्हें सबसे अधिक आदर तो इस बात के लिए मिलना चाहिए कि उन्होंने जाति-पांति के ऊंच-नीच सम्बन्धी विचारों द्वारा शासित दक्षिण में निम्न श्रेणी के लोगों को भी वैष्णव सम्प्रदाय में सम्मिलित होने का अधिकार दिला दिया। रामानुज की यह उदार भावना आगे चलकर उनकी शिष्य परम्परा के सुप्रसिद्ध स्वामी रामानन्द के नेतृत्व में उत्तरी भारत में विशेष रूप से पुष्पित और पल्लवित हुई। इन्हीं रामानंद के शिष्य धनाजी महाराज थे।

रामानुज का जन्म 1017 ई. में हुआ था और मृत्यु 1137 ई. में। इस प्रकार वह लगभग सवा सौ वर्ष तक जीवित रहे। इस सुदीर्घ जीवनकाल का अधिकांश भाग उन्होंने दक्षिण में वैष्णव धर्म की स्थिति सबल बनाने में ही व्यतीत किया। उनके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं में बहुत कम ऐसी हैं, जिनके बतलाने की यहाँ आवश्यकता प्रतीत हो। बचपन ही में पिता की मृत्यु हो जाने के बाद यादवप्रकाश नामक एक वेदान्ती से उन्होंने आरम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी। तदुपरान्त यामुनाचार्य या आलवन्दार के शिष्य पेरियानाम्बी को गुरु बनाकर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और इसी के कुछ दिन बाद ग्रहजीवन से असंतुष्ट होकर सन्यास ग्रहण कर लिया। इन्हीं दिनों यामुनाचार्य की गद्दी पर वह श्रीरंगम में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गए और वहीं उन्होंने वेदान्तसार, वेदान्तदीप, वेदार्थ संग्रह तथा श्रीभाष्य आदि अपनी मुख्य-मुख्य रचनाएं लिखीं। कहते हैं, अपने भाष्य को विद्वानों द्वारा स्वीकृत कराने के लिए वह तत्कालीन प्रमुख विद्या-केन्द्र काश्मीर को भी गए थे। रामानुज के जीवन की एक उल्लेखनीय बात तत्कालीन शैव चोल राजा द्वारा उनके दमन की वह घटना है, जिसके कारण उन्हें श्रीरंगम् से भागकर कावेरी के तट पर शालिग्राम नामक स्थान में 12 वर्ष तक रहना पड़ा था। कहते हैं, इस निर्वासन की दशा ही में मेलूकोट के सुप्रसिद्ध मंदिर को खुदवाकर तथा उसमें मूर्ति प्रतिष्ठित कर पंचम या अत्यंज जाति के लोगों के भी उसमें प्रवेश की योजना उन्होंने की थी। जब ऊपर उल्लिखित चोल राजा की मृत्यु हो गई, तब रामानुज पुन: श्रीरंगम् आ गए थे, जहाँ मृत्यु-पर्यन्त रहकर वह वैष्णव मत का प्रचार करते रहे।

ये व्यक्तित्व की गरिमा है कि फूल कुछ नहीं कहते,
वरना कभी कांटों को मसलकर दिखाइये।

धनावंश का कड़वा सच

● बृजदास स्वामी

एक अंग्रेज लेखक और महान दार्शनिक वाल्तेयर का कथन है कि ***हो सकता है कि मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा।*** वाल्तेयर के इस कथन को अपनी ढाल बनाकर अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ । जो लिख रहा हूँ वह मेरे निजी मंतव्य और निजी विचारों की अभिव्यक्ति है, इसलिए जरूरी नही की आप सबके विचारों से मेल खाते हों ।

इस दुनियां में तीन प्रकार के धनावंशी स्वामी मौजूद हैं ।

A कट्टर धनावंशी स्वामी

B धनाजी विरोधी धनावंशी स्वामी

C सहिष्णु धनावंशी स्वामी

विश्लेषण और व्याख्या इस प्रकार है-

A के अनुसार हम भगत धनाजी (जो जाट थे) के अनुयायी हैं, इसलिए धनावंशी हैं। स्वयं मुझे भी यह बात तथ्यपरक लगती है।

Bकहता है हमे यह स्वीकार नही, हमारा धनाजी जाट से कोई ताल्लुक नहीं।

C कहता है अगर धनाजी हमारे गुरु हैं तो अच्छी बात है और नहीं हैं तब भी कोई दिक्कत नहीं। दोनों ही बात से C के पेट में कोई दर्द ही नहीं है ।

A धनाजी को मानने से समाज संस्कारी होगा, आगे बढ़ेगा, सुधार होगा आदि ।

Bधनाजी को नही मानेंगे, मानने से सुधार नही बिगाड़ होगा ।

C दोनो ही स्थिति में सुधार या बिगाड़ कुछ नही होगा। जो समय अनुसार परिवर्तन होते हैं वह सतत होते ही रहेंगे ।

A चिन्तामग्न है कि समाज दिन प्रतिदिन पीछे जा रहा है ।

अनुभव कहता है कि यदि मेहनत आदत बन जाए,
तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

समय रहते इसे बचा लिया जाये, नहीं तो .....चिड़िया चुग गईं खेत ।

B हमारा समाज तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है, कोई कमी नहीं दीख रही।

C आगे बढ़ रहा है तो खुशी की बात है और पीछे जा रहा है तो ईश्वर से प्रार्थना है कि कुछ बचाव करें क्योंकि मेरी सामर्थ्य नहीं इतने बड़े समाज को बचा सकूँ ।

A अगर जगह जगह धनाजी के मंदिर बन जायें, उनके प्रति सब लोग आस्थावान हो जायें, तो समाज भी सुधर जाए और सब समस्या और भ्रांतियां दूर हो जाये ।

B ना तो मन्दिर बनाना और ना ही उनकी पूजा करनी । B को तो समाज सुधार करना है वो भी बिना धनाजी के । A ने बहुत समझाया कि धनाजी के बिना समाज नही सुधर सकता लेकिन B है कि मानता ही नहीं । और

C मन्दिर बने, समाज सुधरे, समस्या मिटे तो अच्छी बात है और नहीं तो भी कोई फर्क नही पड़ रहा । शायद C का मिजाज ही कुछ ऐसा है कि उसे कोई संशय या भ्रांति है ही नही या वह समाज के उत्थान-पत्तन को समझ नहीं रहा, उसका नज़रिया ही अलग है।

A इनके पास समय भरपूर है, इसलिये समाज सुधार में काफी सक्रिय हैं। अधिकांश सुधार व्हाट्सएप पर कर लेते हैं, इसलिये धरातल पर कम मेहनत करनी पड़ेगी ।

B के पास अपेक्षाकृत कम समय है फिर भी वह समाज विकास के बारे में सोचता है और सक्रियता भी रखता है ।

C के पास समय की कमी है, समाज विकास में उसकी भागीदारी नहीं है । इसके बावजूद भी वह इतना समय तो सुबह और रात को निकाल ही लेता है कि सोशल मीडिया पर चलने वाले समाज सुधार के मैसेज पढ़कर डिलीट कर सके ।

A कहता है कि धनावंश के बारे में मैं जो कहता हूँ वही पूर्ण सत्य है, इसके अलावा कुछ हो ही नहीं सकता । जो हमारी बात नहीं मानते वो अज्ञानी है, इस तरह कई बार वह B का तिरस्कार भी कर देता है । शायद कुछ हठधर्मी है ।

B से बिल्कुल सहमत नहीं है, अपनी तरफ से कोई तथ्य भी प्रस्तुत नही करता। लेकिन वह अपनी बात मनवाने की जिद्द भी नही करता और B को किसी भी तरह कमतर नही समझता, यह उसका बड़प्पन है ।

C को दोनों ही स्वीकार्य है । दोनों ही अच्छे लगते हैं, दोनो से आत्मीयता है । लगता है वह शांतिप्रिय जीव है

A को भूत सवार है कि वह समाज सुधार करके ही दम लेगा। वह धुन का पक्का है, इसलिये मन्दिर बनाकर, संस्था बनाकर, संहिता छापकर या जो भी उपक्रम करना पड़े, येन केन प्रकारेण समाज की डूबती नैया पार लगा ही देगा ।

B व्यवधान डालता है, अड़ंगा लगाता है, हर बात में A के विरुद्ध है, विकास में बाधक बन रहा है ।

C के बारे में आपको बताने की जरूरत नही, आप समझ ही गये कि वह निष्पक्ष है, मूकदर्शक है और तटस्थ है । कवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा था जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध। अब समय उनका अपराध कैसे लिखेगा यह तो भविष्य के गर्भ में है ।

A कहता है हमारे पास प्रमाण है, इतिहास है, अनुसन्धान किया है इसलिए इसे सब स्वीकार करें कि हमारे गुरू धनाजी जाट थे । ताकि सबका कल्याण हो सके । स्वयं मुझे भी लगता है कि बात में दम है ।

B सारे प्रमाण और अनुसंधान को नजरअंदाज कर रहा है, कहता है धना जाट हमारे पूर्वज नहीं हो सकते, यह कोई A की साज़िश लगती है ।

C दोनो की बातों से दुविधा में है कि कहीं मैं अधरझूल में नही रह जाऊं, दुविधा मैं दोनूं गया - माया मिली न राम । लेकिन अपने मनमौजी स्वभाव के कारण वह ज्यादा परवाह नही करता ।

जीतने के लिए हिम्मत चाहिए, हारने के लिए तो एक डर ही काफी है।

आलेख

चेतन स्वामी

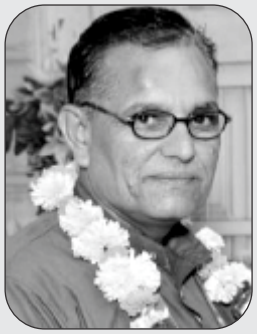

धनावंशी सम्प्रदाय

• अध्याय प्रथम •

सम्प्रदाय कोई सा भी हो, उसकी स्थापना एक गुरु के द्वारा ही सम्भव होती है। सम्प्रदाय वस्तुत: एक धर्म मार्ग को कहते हैं। गुरु अपने अनुयायी वर्ग को धर्म पथ पर भली प्रकार चलाने के लिए सम्यक् रीति से जिस पद्धति और धर्माचार संहिता का निर्माण करता है-उसे सम्प्रदाय कहते हैं । अर्थात जो पंथ, गुरु प्रणीत और शिष्य अनुसरण परम्परा से चला आ रहा है, वह सम्प्रदाय कहलाता है। कहा भी गया है- सम्यक् प्रदीयत-इति सम्प्रदाय:।

कल्याण मासिक (वर्ष-70 संख्या-1 पृष्ठ 149 में सम्प्रदाय की परिभाषा देते हुए कहा गया है- सम्प्रदाय का अर्थ सीधे शब्दों में है-धर्म का पथ विशेष। एक सम्प्रदाय साधक को- अनुयायी को एक पथ प्रदान करता है, जिस पर चलकर वह धर्म के निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुंच सके। एक ग्रंथ,एक उपासना,एक आचार पद्धति जहां भी प्रचलित है, जहां भी कहा जाता है--कल्याण का यही मार्ग है, वह सम्प्रदाय है।

सम्प्रदाय प्राचीनकाल से विद्यमान रहे हैं। सम्प्रदायों का उदय धार्मिक मान्यताओं के कारण हुआ। शैव-शाक्त-वैष्णव-गाणपत्य तथा सौर जैसे सम्प्रदाय आदिकाल से विद्यमान रहे हैं। वर्तमान युग में सम्प्रदाय से बंधे व्यक्ति को संकीर्ण कहा जाने लगा है, क्योंकि जो व्यक्ति जिस सम्प्रदाय से सम्पृक्त होता है, वह उसके प्रति प्राणप्रण से समर्पित और निष्ठावान होता है। उस निष्ठा के अन्तर्गत वह अपने सम्प्रदाय पर अपना कुछ भी न्यौछावर कर सकता है- यहां तक कि प्राण भी। लेकिन, सम्प्रदाय का संकीर्ण अर्थ न करते हुए यह जानना चाहिए कि यह भी किसी सिद्ध पुरुष

मंजिल तभी पाई जा सकती है, जब शरीर में जोश हो और मन में संतोष हो।

का खोजा हुआ मार्ग है-साधन-पथ है, जिस पर चलकर उसके अनुयायी अपने परमोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्य शंकर के पश्चात भारतवर्ष में पूर्व प्रचलित सम्प्रदायों से कुछ विलग नए सम्प्रदाय भी बड़ी संख्या में अस्तित्व में आए। प्रश्न हो सकता है कि भारत में इतने सम्प्रदायों का निर्माण क्यों हुआ? तो कहा जा सकता है कि सम्प्रदाय का निर्माण संस्कार शुद्धि और अज्ञान आवरण की समाप्ति के लिए किया जाता रहा है। सम्प्रदाय हमें यह सुविधा देता है कि उससे जुड़कर व्यक्ति जो जहां है वहीं बैठा अपने सम्प्रदाय की मान्यताओं का परिपालन कर सकता है। साधना मार्ग पर चलनेवालों को अमूमन कोई न कोई सम्प्रदाय- पथ अपनाना ही पड़ता है। अनुयायियों का यह साधन पथ आगे चलकर कई बार गृहस्थियों में जाति का रूप भी ग्रहण कर लेता है। सम्प्रदायों से जो जातियां बनी- उनमें धनावंशी स्वामी भी एक है।

धार्मिक सम्प्रदायों में बहुत सारी सैद्धांतिक बातें कालान्तर में जुड़ती-घटती भी रहती हैं तथा एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय का जन्म हो जाना भी संभव है। जैसे रामानुज सम्प्रदाय से आगे चलकर रामानंद सम्प्रदाय ने अपना विलग रूप धारण कर लिया। यहां सिद्धान्त और मान्यताओं का ही अंतर था। मूल चीज धर्म होती है, वही सार्वभौम होता है। धर्म की भूमि पर सम्प्रदाय मार्ग रूप होते हैं। सम्प्रदायों के अनुयायियों में कालगत शैथिल्य आ जाना भी सामान्य बात है। अपनी मान्यताओं पर चलनेवाले लोग अपने पारम्परिक सम्प्रदाय का कई बार परित्याग भी कर दिया करते हैं। पर, धर्म के मार्ग से हटने का तात्पर्य है अपने विनाश को आहूत करना। सम्प्रदाय से बंधे रहने का आग्रह इसीलिए किया जाता रहा है ताकि व्यक्ति धर्म च्युत न हो। गीता का यह श्रुति वाक्य यही बात कहता है-- स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह। अपने धर्म-अपने सम्प्रदाय, में जीवन व्यतीत करना कल्याणकारी है-अन्यथा वह धर्म पथ से विचलित हो जाएगा।

सम्प्रदाय का मूल-- धर्म है-इसलिए धर्म को भी संक्षेप में जान लेना समीचीन होगा। कर्तव्य पथ पर चलना धर्म है। नैतिक नियम धर्म है। धारयति इति धर्म: यानि जिस बात को पुण्यशाली-जन धारण करते हैं-वह धर्म है। हम जिन नैतिक नियमों को स्वीकार कर उन पर चलते हैं तब हमारा कल्याण संभव है। तात्पर्य यह हुआ कि धर्म हमारा कल्याण करता है। धर्म की व्याख्या थोड़ी और आगे बढकर यह की गई कि यह यश,उन्नति और मोक्षप्रदायी है तथा इससे लौकिक और पारलौकिक उन्नति संभव है। भिन्न-भिन्न स्मृतिकारों ने धर्म के लक्षणों का वर्णन कर उन लक्षणों को संख्या में बांधने का यत्न किया है। धर्म के तीन भेद भी किए गए-सामान्य धर्म, विशेष धर्म और आपद् धर्म।

सम्प्रदायों की स्थापना करनेवाले धर्मवेत्ता होते हैं। वे हमें धर्माचरण में चलना सिखाते हैं। जो धर्म पथ पर नहीं चलता, उसके पतित होने की संभावना सतत रहती है। सम्प्रदाय स्वधर्म सिखलाता है-यही उसकी बड़ाई है। एक संत ने कहा है---

कर्म करै तो धर्म कर, नहिंतर कर्म न खट्ट।
जन हरिया जुग जेवड़ी, ज्यूं ऊबट्ट ज्यूं बट्ट।।

संत लोग सम्प्रदाय स्थापना इसलिए करते हैं ताकि इससे परहित होता है। एक बोध रहित व्यक्ति धर्मारूढ हो सकता है। परहित का भाव रखकर संत सम्प्रदाय की स्थापना करते और अनुयायी शिष्य उस सम्प्रदाय की श्रीवृद्धि और संरक्षण करते हैं। लोक-कल्याण के भाव के कारण ही संतों-भक्तों की प्रशंसा होती रहती है।

परहित लागि तजइ जो देही।
संतत संत प्रसंसहि तेही ।।

अपने गुरु द्वारा प्रणीत सम्प्रदाय में गहन निष्ठा आवश्यक है। कहते हैं कि सम्प्रदाय की आज्ञा का पालन किसी राजाज्ञा की तरह ही करना चाहिए।

शंकराचार्य ने सम्प्रदायों के लिए एक नई शास्त्रीय परम्परा का सूत्रपात किया। यह सम्प्रदाय प्रवर्तक के लिए आचार्य परम्परा थी। इस परम्परा का सीधा सम्बन्ध विद्वत्ता से था। जबकि कोई सीधा सरल संत भक्त किसी सम्प्रदाय की स्थापना करता है तो वहां उसकी अनुभव-वाणी ही प्रमुख है। अनुयायी उस वाणी में विश्वास रखे। जबकि आचार्य के लिए प्रस्थान-त्रयी पर भाष्य रचने की परम्परा

बुरा व्यक्ति उस समय और बुरा हो जाता है, जब वह अच्छे होने का ढोंग करता है।

धना अपने गृह क्षेत्र से निकल कर जाट बाहुल्य उत्तरी राजस्थान में आ गए। आज भी प्रत्यक्ष साक्ष्य के रूप में देखते हैं तो उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान में ही धनावंशी स्वामियों का बाहुल्य है। अपने स्वजातीयों को धर्म-अध्यात्म का महत्व समझाने में उन्हें सुगमता रही। पर समस्त जाट परिवार उनसे सहमत नहीं हो पाए। आत्मतत्व और आत्मानुशासन की बात किसी भी युग में और कहीं भी सारे लोग कब कब समझ पाते हैं। भिन्नरुचिर्हि लोकः लोगों की रुचियां सदैव भिन्न रहती है।

एक अलिखित अनिवार्यता सी बन गई थी। वेदान्त शास्त्र में उपनिषद्- श्रीमद्भगवद्गीता-और ब्रह्मसूत्र को प्रस्थान-त्रयी कहा जाता है। इन तीनों पर भाष्य तैयार करना होता था। एक तरह अध्यात्ममार्गी का बुद्धि परीक्षण था। पन्द्रहवीं शताब्दी में रामानंदजी ने भक्ति के प्रसार हित कायम होनेवाले सम्प्रदायों को भाष्य रचना से मुक्त जैसा कर धर्म को अंत्यज-पिछड़ी जातियों के घरों तक पहुंचाने का यत्न किया। विद्वान बृजेन्द्र सिंघल की रामसनेही सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा -पुस्तक में पृष्ठ 156 पर कथन है कि वस्तुत: आचार्य शंकर से पूर्व एक सम्प्रदाय आचार्य के लिए प्रस्थान-त्रयी पर भाष्य रचने की परम्परा नहीं थी। यह परम्परा आचार्य शंकर ने प्रारंभ की और आगे आनेवाले अन्यों ने इसका अनुवर्तन किया। अत: यह परम्परा बन गई। दूसरी शर्त अपने अनुयायियों के लिए आचार संहिता तैयार करना था।

सम्प्रदाय के लिए यह मान्यता बन गई कि कोई धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्ति अगर किसी सम्प्रदाय से सम्बद्ध नहीं है तो उसका तो मंत्रोच्चारण ही व्यर्थ है। पद्म पुराण में वैष्णव सम्प्रदायों पर विवरण प्राप्त होता है। उसी विवरण के अंतर्गत वर्णन है-- सम्प्रदाय विहीना ये मन्त्रास्ते निस्फला मता: ।

हिन्दू-धर्म कोश (राजबली पाण्डेय) में सम्प्रदाय के सम्बन्ध में परिभाषा दी गई है-गुरु परम्परागत अथवा आचार्य परम्परागत संघटित संस्था। भरत(आचार्य) के अनुसार शिष्ट परम्परा प्राप्त उपदेश ही सम्प्रदाय है। इसका प्रचलित अर्थ है--गुरु परम्परा से सद् उपदिष्ट व्यक्तियों का समूह।

सम्प्रदाय प्रवर्तन में रामानंद के पश्चात आचार्य परम्परा के स्थान पर संत परम्परा अधिक विकसित हुई। स्वयं रामानंद ने धर्म और धार्मिक संस्कारों में आ रहे विचलन को भांपकर भारत-भू पर पुन: धर्म संस्थापन्न के लिए अपने विभिन्न जाति के ईश्वरानुरागी संत शिष्यों को अनेक धार्मिक सम्प्रदायों की स्थापना का संदेश प्रदान किया। ऐसे सम्प्रदायों की स्थापना संतवाणी और सदुपदेशों के माध्यम से हुई।

किसी नवीन सम्प्रदाय की स्थापना के पीछे जिस परावर्तन को रामानंदजी देख रहे थे-उसे सफलीभूत होते देखकर वे प्रसन्न थे। ऐसे सम्प्रदायों से धर्म की वृद्धि हुई। रामानंद काल के पूर्व ही मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा हिन्दू धर्म और सम्प्रदायों को अनेक प्रकार से नुकसान पहुंचाया जा रहा था तथा धार्मिक कुचेष्टाएं की जा रही थी। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में सभी हिन्दू जातियों में आत्म स्वाभिमान जाग्रत करने की आवश्यकता को रामानंदजी द्वारा समझा गया। धार्मिक क्षेत्र में उनके निर्णय क्रांतिकारी रहे। भक्ति

जमीन से जुड़े लोग अक्सर आसमान छू लेते हैं।

काल को स्वर्णकाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि इतिहास में पहली बार ऐसा देखा गया कि सारा देश भक्ति की भावना से अनुप्राणित हो उठा।एक लहर सी व्याप्त हो गई। जार्ज ग्रियर्सन ने इसे बिजली की चमक बताया। हिन्दी साहित्य कोश के सम्पादक मण्डल के लेखक बृजेश्वर वर्मा (पृष्ठ 573) का मानना है कि--''यह मुस्लिम आक्रमणकारियों के अत्याचारों तथा उससे उत्पन्न हुई सामाजिक अव्यवस्था और अरक्षा की भावना के प्रतिक्रिया स्वरूप अचानक उमड़ उठा था। ऐसे समय में प्राचीन भारतीय जीवनादर्शों को एक धार्मिक आवरण के साथ उपस्थित करना आवश्यक हो गया था। सामाजिक असुरक्षा, उत्पीड़न, एक से दूसरी जातियों के प्रति विद्वेष, जाट-राजपूत जैसी बड़ी जातियों में अपनी ही जाति के प्रति विग्रहपूर्ण स्थिति, बाह्याडम्बरों की बहुतायत, रजवाड़ों के करों का बोझ,घोर असुरक्षा के माहौल में भगवद् प्रीति-- एक सम्बल जैसी प्रतीत हो रही थी। रामानुज,निम्बार्क, वल्लभाचार्य और मध्वाचार्य ने पूर्व काल में भक्ति का जो मार्ग प्रशस्त किया,वह रामानंद और आगे उनकी शिष्य मंडली का पाथेय बना। भक्ति सम्प्रदायों के माध्यम से जो प्रयत्न हुए, उनसे भक्ति के विभिन्न स्वरूप सामने आए। निर्गुण-सगुण तथा प्रेममार्गी भक्ति धाराओं का विकास हुआ। इस काल में केवल सम्प्रदायों के माध्यम से ही नहीं स्वतंत्र भाव के भी बहुत साधक भक्त हुए जो सगुण-निर्गुण के समन्वय के साथ परमात्म भजन कर रहे थे।

धार्मिकता का लोप और भक्ति का पराभव न हो, यह सोचकर रामानंदजी ने भारत भ्रमण किया, जिसे रामानंदजी की दिग्विजय यात्रा कहा जाता है। इसके बाद उन्होंने तुरत रामावत सम्प्रदाय की स्थापना की और अपने सभी शिष्यों से भी अपने अनुयायी वर्ग के सम्प्रदाय स्थापित करने का आग्रह किया। इन सम्प्रदायों की स्थापना के पीछे उनका बड़ा लक्ष्य इस्लामीकरण के बढते प्रभाव को रोकना था। ऐसे में सम्प्रदायों की वैचारिक भिन्नता कोई खास मायने नहीं रखती थी। स्वयं रामानंद इस असहमति के साथ अपने गुरु राघवाचार्यजी से विलग हो गए कि उन्हें जातिय ऊंच नीच की बजाय निष्प्राण होती भारतीय आध्यात्मिकता में प्राण फूंकना था। हर संत भक्त को उन्होंने अपनी मान्यता स्पष्ट करते हुए यह संदेश दिया कि- जात-पांत बूझै नहीं कोई-हरि को भजै सो हरि का होई। इस सूत्र-वाक्य ने ब्राह्मणेतर जातियों के संतों-भक्तों में नव उत्साह जागृत करने का कार्य किया। हिन्दू सत्व रक्षण के निमित्त न केवल सैकड़ों प्रकार के सम्प्रदाय बने बल्कि विभिन्न अखाड़ों की भी स्थापना हुई। जब कोई क्रांतिचेता महापुरुष समाज का आह्वान करता है तो सामान्य जन का आकृष्ट होना स्वाभाविक है। 'गुरु मिल्या रामानंद' पुस्तक के सम्पादक शास्त्री कोसलेन्द्रदास का कथन है कि-''महापुरुष के अनुयायी एक चैतन्य विचार को कर्मकांड से आच्छादित कर उसे रिलीजन-मजहब या सम्प्रदाय का रूप दे देते हैं। इसलिए हिन्दू धर्म में अनेकों रिलीजनों का प्रादुर्भाव हुआ। सम्प्रदाय विचार का वाहक बनता है। स्वामी रामानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व के दर्शन सम्पूर्ण समाज को कराने में मुख्यत: उनके अनुयायियों की ही भूमिका महत्वपूर्ण है।''

सम्प्रदाय के प्रति--अनुयायी में यह दृढ़ धारणा रहती है कि वह गंतव्य तक अवश्य पहुंचाएगा। धर्म निरूपण करनेवाले सम्प्रदायों के प्रति प्रकट किया गया यह विश्वास फलदायी भी है । कहा भी गया है- साम्प्रदायिकता का ठीक अर्थ है--साधना पथ आरूढ। जो धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, उसे कोई न कोई पथ तो अपनाना ही होगा। लक्ष्य तक जाना है तो रास्ता पकड़ कर चलना होगा।(कल्याण -वर्ष 70 पृष्ठ 150) सम्प्रदायों की स्थापना करनेवाले संतो-भक्तों के मन में यह भावना रही कि वे जिस सम्प्रदाय की स्थापना कर रहे हैं, वह कर्म बंधन में बंधे गाफ़िल व्यक्ति के लिए एक सुगम पथ बनेगा। धर्म की प्रतिष्ठा सार्वभौमिक है,किंतु उसके संप्रसार में सम्प्रदायों की सकारात्मक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। सम्प्रदाय अपने अनुयायी को निर्दिष्ट धर्म मार्ग पर चलने की सुगमता और अधिकार प्रदान करता है । जिस प्रकार अन्यान्य सम्प्रदायों ने प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त किया, उसी प्रकार वैष्णव संप्रदायों में श्रीरामानंदजी के बारह शिष्यों में परिगणित भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज द्वारा प्रवृतित

कोशिश आखरी सांस तक करनी चाहिए, या तो लक्ष्य हासिल होगा या अनुभव...
दोनों ही चीजे अच्छी है।

धनावंश सम्प्रदाय ने भी पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की। कतिपय महंत द्वारों--वैष्णवीय सदाचरणों तथा पांच सौ के लगभग वैष्णवतार देवों के मंदिरों के साथ यह सम्प्रदाय अस्तित्व में आया। अनन्तदास की परचरि में उल्लेख है। अब खेरीपुर खारो लग्यो-उपज्यो बहु आनंद। धना उतर दिशि रम गया, छोड़ मोह का फंद ।।

धनाजी ने संवत 1532 में खैरीपुर (वर्तमान--धुआं कलां) का परित्याग कर दिया और वे उत्तर दिशा(उतराधा राजपूताना) में अपनी ही जाति के लोगों में भगवद् निष्ठा यानि भक्ति जागृत करने तथा देव पूजा और वैराग्य के मार्ग में प्रवृत्त करने को निकल पड़े । उनके प्रयास का ही प्रतिफल है कि धनावंश अस्तित्व में आया। अपने अनुयायियों के हर परिवार में उन्होंने एक व्यक्ति को निहंग रखने की आज्ञा दी। लम्बे काल तक इस आज्ञा का परिपालन हुआ। परिवार में उस निहंग व्यक्ति के कारण ही हम वैरागी कहलाए। हर निहंग के लिए एक सेवा पूजा का मंदिर स्थापित किया गया। बाद के राजाओं ने उन सभी निहंगों के लिए पेटिया प्रबंध किया तथा अनेक करों में छूट तथा रियायतें प्रदान की। राज की बहियों में यह उल्लेख मिलता है, लाभान्वित धनावंशियों की सूची आगे के अध्याय में आएगी। संवत 1532 धनाजी का प्रौढ काल था। तत्कालीन जाट समाज के भक्ति से विरत हो जाने तथा अनेक अराजकताओं में फसा देखकर,उनके कल्याण की मंशा से प्रेरित होकर कृपावश उन्होंने धनावंश की स्थापना की। धनाजी की भक्ति से सभी प्रभावित थे। उस प्रभाव से भावित होकर ही कतिपय जाट परिवारों ने वैराग्य ग्रहण किया। जिन्होंने वैराग्य ग्रहण किया उन परिवारों की कोई कोई लोग थोड़ी हंसी भी उड़ा दिया करते। ऐसी कुछ प्राचीन कहावतें आज भी प्राप्त होती हैं।

संत मत में आचार्य शंकर की शास्त्रीय परम्परा का कोई विशेष स्थान नहीं रहा, क्योंकि वहां विद्वता से अधिक भक्ति का महत्व था, पाण्डित्य से विलग यहां सदाचरण के पथ पर एक बड़े अनुयायी वर्ग को संचालित करना था। इस परम्परा में वाणी और सदाचरण तथा भगवद् निष्ठा का ही महत्व था।

धनाजी स्वयं जाट जाति से थे। परन्तु बाल्यकाल की भक्ति के कारण उनका हर आचरण वैष्णवता से संसिक्त था। अनंतदासजी कहते हैं-- धना के धीरज मन मांहि-हर सूं हेत और सूं नाहिं। अनंतदास का मन्तव्य संतों की आत्यंतिक भक्तिमय विशिष्टता को परचयी के माध्यम से उपस्थित करने का था। भक्ति को शीर्ष पर रखकर ही वे जिन भक्तों के चरित्र लिखते हैं,उनके चामत्कारिक प्रसंगों को देना नहीं भूलते, पर पंथों में रुचि अधिक नहीं है। इस विषय में डॉ पुरुषोत्तम अग्रवाल का कथन उचित ही है-वे कहते हैं--'अनंतदास की परचइयों में बाकायदा जीवनी लिखने की बजाय--बल संतों की साधना और लोकमान्यता का परिचय देने पर है। (अकथ कहानी प्रेम की--पृष्ठ-156) परचयों में यह देखा गया हैं-कुछ प्रसंग कोरे संकेत मात्र ही होते हैं। जैसे धनाजी के सम्बन्ध में कहा गया कि खैरपुर में अत्यधिक संतों के इकट्ठा होना,फिर भी बिना हताश हुए उनके प्रसाद का प्रबंध करना- तत्पश्चात गृह छोड़कर चले जाने के लिए लम्बा विवरण न लिख कर केवल इतना ही लिखा-- धना उतर दिशि रम गया

उत्तर दिशा से तात्पर्य है धना अपने गृह क्षेत्र से निकल कर जाट बाहुल्य उत्तरी राजस्थान में आ गए। आज भी प्रत्यक्ष साक्ष्य के रूप में देखते हैं तो उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान में ही धनावंशी स्वामियों का बाहुल्य है। अपने स्वजातीयों को धर्म-अध्यात्म का महत्व समझाने में उन्हें सुगमता रही। पर समस्त जाट परिवार उनसे सहमत नहीं हो पाए। आत्मतत्व और आत्मानुशासन की बात किसी भी युग में और कहीं भी सारे लोग कब कब समझ पाते हैं। भिन्नरुचिर्हि लोक: लोगों की रुचियां सदैव भिन्न रहती है। कुछ लोग सत्योन्मुखी होते हैं, कुछ केवल बहिर्मुखी। सम्प्रदाय--किसी क्रांति से कम नहीं होता। पहले पहल जुड़नेवाले लोग धार्मिक रूप से भावनाशील होते हैं-बाद में तो किसी समूह या सम्प्रदाय में उसका सुखद संप्रसार देखकर अन्य लोग जुड़ने लगते हैं। जितने संप्रदायों का हम इतिहास पढते हैं-उनमें पहले थोड़े से ही लोग जुड़ते हैं।

जाट जाति से भक्त धनाजी ने अपने अनुयायियों को वैरागी नाम दिया और उन्हें स्वामी पद प्रदान किया। जो

कोई इंसान हमेशा एक जैसा नहीं रहता, वक्त, हालात और लोग उसे बदलने पर मजबूर कर देते हैं।

व्यक्ति वैराग्य के भावों से भावित होता है, उसे अपनी इन्द्रियों का स्वामी होना परम आवश्यक है। इन्द्रियनिग्रह बिना स्वानुशासन नहीं आ पाता। धनाजी ने अपने अनुयायियों को सम्प्रदाय के रूप में एक नव पंथ प्रदान किया जो धनावंश कहलाया। वंश दो प्रकार से चला करते हैं-- नाद-वंश और बिन्दु-वंश। गुरु-वचन से प्रणीत सम्प्रदाय नाद-वंश तथा पिता द्वारा सृष्ट वंश बिन्दु-वंश कहलाता है। अधिकांश सम्प्रदाय गुरु के आप्त वचनों-उपदेशों से प्रभावित जन के होते हैं-पथारूढ अनुयायियों की पीढियां उन्हें चलाती रहती हैं। धनाजी ने अपने अनुयायियों की पूर्व जाति तथा पूर्व जातीय संस्कार छुड़वा दिए। उन्होंने सद्य बने वैरागियों पर नियमों का आतंकित करनेवाला बोझ नहीं लादा। सहज ठाकुर प्रीति का आग्रह रखा। मंदिर पुजारी को निहंग इसलिए रखा ताकि राजा और समाज उसका सहज भरण पोषण करे-अपनी जिम्मेदारी समझे। मंदिरों को प्रदत्त भूमियां उसी संरक्षण की गाथा कहती है। धनाजी ने धनावंश सम्प्रदाय के स्वामियों को किन्ही शास्त्रीय उलझनों में नहीं बांधा-उन्हें यह सुगमता प्रदान की कि वे अपने इष्ट रूप में वैष्णवीय मान्यता के अन्तर्गत किसी भी स्वरूप का पूजन करे। सगुण विग्रह रूप सीताराम जी, राधा-कृष्ण जी, नृसिंह भगवान आदि किसी स्वरूप की पूजा-अर्चना कर सकता है। वैयक्तिक तौर पर वे निर्गुण-निराकार घट-घटवासी परमात्मा के अनुचिंतन से भी असहमति नहीं रखते। वे चाहते थे कि ठाकुर जी के जिस रूप में प्रीति है,वह दृढ़ हो जाय।

पुरानी मान्यता पीढी दर पीढी चलती रही है कि धनाजी के उपदेशों से सबसे पहले धनावंशी बनने वाले सहृदय लोग सुजानगढ क्षेत्र के शोभासर और फिरवांसी के थे। निश्चय ही धनाजी महाराज ने यहां अपने उपदेश दिए होंगे। वैसे अपने जीवनकाल में ही धनाजी एक किंवदंती पुरुष बन चुके थे। उन्होंने अपने अनुयायी रूप धनावंशियों पर उपकार किया। एक नव सम्प्रदाय की स्थापना कर उन्हें भक्ति के मार्ग में अग्रसर किया। प्रत्येक धनावंशी उनका यह उपकार विस्मृत नहीं कर सकता।

राम नाम गुण-गान

राम नाम मेरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय।
मैं मंद-भागण करम-अभागण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय।।1।।

बिरह-पिंजर की बाड़ सखी री, उठकर जी हुलसाऊँ ए माय।
मनकूँ मार सजूँ सतगुरसूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय।।2।।
डंको नाम सुरतकी डोरी, कड़ियाँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय।
प्रेमको ढोल बण्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय।।3।।

तन करूँ ताल, मन करूँ ढफली, सोती सुरति जगाऊँ ए माय।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो प्रीतम-पद पाऊँ ए माय।।4।।

मो अबलापर किरपा किज्यो, गुण गोविंद का गाऊँ ए माय।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, रज चरणन की पाऊँ ए माय।।5।।

संघर्ष की राह पर जो चलता है वही संसार को बदलता है,
जिसने रातों से जंग जीती है, सूर्य बनकर वही निकलता है।

अध्यात्म

सनकादि कुमार

सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्माजी ने जैसे ही रचना का प्रारम्भ करना चाहा, उनके संकल्प करते ही उनसे चार कुमार उत्पन्न हुए–सनक, सनन्दन, सनातन एवं सन्तकुमार। ब्रह्माजीने सहस्र दिव्य वर्षो तक तप करके हृदय में भगवान् शेषशायी का दर्शन पाया था। भगवान ब्रह्माजी को भागवत का मूलज्ञान दिया था। इसके पश्चात ही ब्रह्माजी मानसिक सृष्टि में लगे थे। ब्रह्माजी की चित्त अत्यन्त पवित्र एवं भगवान में लगा हुआ था। उस समय सृष्टिकर्ता के अन्त:करण में शुद्ध सत्त्वगुण ही था, फलत: उस समय जो चारों कुमार प्रकट हुए, वे शुद्ध सत्त्वगुण के स्वरूप हुए। उनमें रजोगुण तथा तमोगुण था ही नहीं। न तो उनमें प्रमाद, निद्रा, आलस्य आदि थे और न सृष्टि के कार्य में उनकी प्रवृत्ति ही थी। ब्रह्माजी ने उन्हें सृष्टि करने को कहा तो उन्होंने सृष्टिकर्ता की यह आज्ञा स्वीकार नहीं की। विश्व ज्ञान की परम्परा को बनाये रखने के लिए स्वयं भगवान ने ही इन चारों कुमारों के रूप में अवतार धारण किया था। कुमारों की जन्मजात रुचि भगवान के नाम तथा गुण का कीर्तन करने, भगवान की लीलाओंका वर्णन करने एवं उन पावन लीलाओं को सुनने में थी। भगवान को छोड़कर एक क्षण के लिए भी उनका चित्त संसार के किसी विषय की ओर जाता ही नहीं। ऐसे सहज स्वभावसिद्ध विरक्त भला कैसे सृष्टि कार्य में लग सकते थे।

उनके मुख से निरन्तर 'हरि:शरणम' यह मङ्गलमय मंत्र निकलता रहता है। वाणी इसके जप से कभी विराम लेती ही ही नहीं। चित्त सदा श्रीहरि में लगा रहता है। इसका फल है कि चारों कुमारों पर काल का कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे सदा पाँच वर्ष की अवस्था के ही बने रहते है। भूख–प्यास, सर्दी–गरमी, निद्रा–आलस्य–कोई भी माया का विकार उनको स्पर्श तक नहीं कर पाता। कुमारों का अधिक निवास–धाम जनलोक है–जहाँ विरक्त, मुक्त, भगवद्भक्त, तपस्वीजन ही निवास करते हैं। उस लोक में सभी नित्यमुक्त हैं। परंतु वहां सब के सब भगवान के दिव्य गुण एवं मङ्गलमय चरित सुनने के लिए सदा उत्कण्ठित रहते हैं। वहाँ सदा–सर्वदा अखण्ड सत्सङ्ग चलता ही रहता है। किसी को भी वक्ता बनाकर वहाँ के शेष लोग बड़ी श्रद्धा से उसकी सेवा कर के नम्रतापूर्वक उससे भगवान का दिव्य चरित सुनते ही रहते हैं; परंतु सनकादि कुमारों का तो जीवन सत्सङ्ग है। वे सत्सङ्ग के बिना एक क्षण नहीं रह सकते। मुख से भगवान्नाम

उस सुख का त्याग कर दें, जो किसी के दु:ख का कारण बन जाये।

का जप, हृदय में भगवान का ध्यान, बुद्धि में व्यापक भगवत्तत्व की स्थिति और श्रवणों में भगवद्गुणानुवाद–बस, यही उनकी नित्य की दिनचर्या है।

चारों कुमारों की गति सभी लोकों में अबाध है। वे नित्य पञ्चवर्षीय दिगम्बर कुमार इच्छानुसार विचरण करते रहते हैं। पाताल में भगवान के शेष के समीप और कैलास पर भगवान शंकर के समीप वे बहुत अधिक रहते हैं। भगवान शेष एवं शंकरजी के मुख से भगवान के गुण एवं चरित सुनते रहने में उनको कभी तृप्ति ही नहीं होती। जनलोक में अपने में से ही किसी को वक्ता बनाकर भी वे चरित–श्रवण करते रहते हैं। कभी–कभी परम अधिकारी भगवद्भक्त पर कृपा करने के लिए वे पृथ्वी पर भी पधारते है। महाराज पृथु को उन्होंने ही तत्वज्ञान का उपदेश किया। देवर्षि नारदजी ने भी कुमारों से श्रीमद्भागवत का श्रवण किया। अन्य भी अनेक माहामाग कुमारों के दर्शन उनसे उपदेशामृत से कृतार्थ हुए हैं। भगवान विष्णु के द्वार रक्षक जय–विजय कुमारों का अपमान करने के कारण वैकुण्ठ से भी च्युत हुए और तीन जन्मों तक उन्हें आसुरी योनि मिलती रही।

सनकादि चारों कुमार भक्ति मार्ग के मुख्य आचार्य हैं। सत्सङ्ग के वे मुख्य आराधक हैं और कीर्तन के परम प्रेमी हैं। श्रवण में उनकी गाढतम निष्ठा है। ज्ञान, वैराग्य, नाम–जप एवं भगवच्चरित्र सुनने की अबाधन उत्कण्ठा आदर्श ही उनका स्वरूप है।

संकीर्तन से समाधि

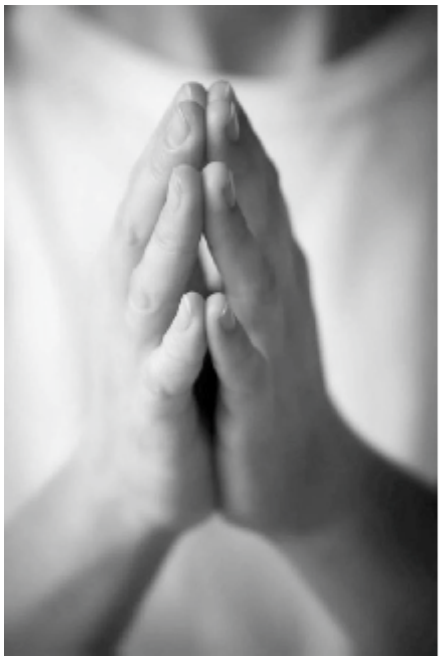

भक्ति–साधना में संकीर्तन का बड़ा महत्त्व है, किंतु यह प्रक्रिया कोई नई नहीं, वरन् वैदिक काल से चली आ रही है। साम–गायक का उद्गीथ–गान संकीर्तन से भिन्न नहीं है। यज्ञादि अनुष्ठानों में मंत्रमयी आहुतियां भी संकीर्तन का ही एक रूप है। ज्ञानी का संकीर्तन ज्ञानमयी वाणी से और योगी का प्राण से होता है। योगाभ्यास के द्वारा जब उसके प्राण पूरक–रेचक क्रियाएं करते हैं तब वे भी एक प्रकार का जप, एक प्रकार का संकीर्तन ही करते हैं। उसमें जो ध्वनि होती, उपनिष्षतकारों ने उसे 'हंस' ध्वनि कहा है। वस्तुत: ऐसी ध्वनि का एक दिन–रात चौबीस घंटों में स्वभाविक रुप से ही इक्कीस हजार छ: सौ की संख्या होती है। उसका यह क्रम कभी टूटता नहीं। यहीं हंस–ध्वनि पर्याय क्रम से 'सोऽहं' बन जाती है। आगे चलकर ऐसी वृत्ति वाले कृतकृत्य होकर गा उठते हैं– 'शिव: केवलोऽहं शिव: केवलोऽहम्।'

मनुष्य के प्रत्येक श्वास–नि:श्वास के साथ ऐसी ध्वनि निकलती है, जिसे अजपा (गायत्री) जप कहते हैं। कानों को बंद करके सुनने का प्रयास करें तो अनाहत ध्वनि निरन्तर ही चलती प्रतीत होती है। इसका तात्पर्य है कि संकीर्तन जीवमात्र का स्वभाव है। इसका अर्थ हुआ कि कर्मवान व्यक्ति इन्द्रियों के द्वारा संकीर्तन करते हैं और योगिजन प्राण के द्वारा, किंतु भक्तों का संकीर्तन एक विशेष प्रकार का है, जिसमें न किसी कर्म की अपेक्षा है, न ज्ञान की, न योगाभ्यास की ह। उसका कारण यह भी है कि भक्ति की अनन्यतम अवस्था में पहुँचने पर भक्त और भगवान में कोई भेद नहीं रह जाता। अत: परमश्रेष्ठ भक्त भी वन्द्य है। नारद–भक्तिसूत्र (41) में स्पष्ट कहा है–'तस्मिंस्तज्जने भेदाभावात्' अर्थात् भगवान में और उनके भक्तों में भेद का अभाव है।

परिवार हो या संगठन, सब में सफलता का राज है,
एक दूसरे के विचारों को धैर्य से सुनना, समझना और सम्मान देना।

धनावंशी महासभी की आवश्यकता

विशद परिचर्चा

इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा में चेतन स्वामी श्रीडूंगरगढ़, घनश्याम स्वामी श्रीडूंगरगढ़, अशोक सींवर शेरेरा, ओमप्रकाश स्वामी पाली, प्रेमदास स्वामी झाड़ेली, बृजदास स्वामी गुसांईसर, छगन स्वामी पाली, प्रेमदास स्वामी खिंयाला, शिवलाल स्वामी दौलतपुरा, श्रीधर स्वामी सुजानगढ़, राधेश्याम स्वामी नागौर ने भाग लिया तथा परिचर्चा का संचालन चेतन स्वामी ने किया।

चेतन स्वामी के विचार

साठ-सतर वर्ष पहले बहुत सारे समाजों की महासभाएं बनीं। अगर उस समय धनावंश की भी महासभा बन गई होती तो आज जो हम विभिन्न भ्रमों से जूझ रहे हैं--वह नहीं होता। महासभाएं- विविध प्रकार के काम करती हैं। इतिहास ग्रंथ का काम भी महासभा का होता है, अब तक हो गया होता। एक केन्द्रीय स्थल बन चुका होता। जो तरह- तरह के लोग जेबी संस्थाएं बनाए हुए हैं और अपने को स्वयंभू अध्यक्ष बनाए हुए हैं, ऐसे उटपटांग काम नहीं होते। महासभा का नियंत्रण होता, तो वाहियात बात करनेवाले लोग नहीं होते। समाज सुधार के ढेरों काम हो चुके होते। समाज में विद्वता और आध्यात्मिकता का वातावरण बनता। समाज के महंत-द्वारों पर नियंत्रण रहता। जमीनें लोग नहीं खाते। मंदिर खंडहर नहीं होते। मंदिरों का मतलब समझते। धनाजी का और उनकी भक्ति का अर्थ समझते। समाज का विपुल साहित्य छपता। किसी असहाय की सहायता के लिए कोष बनते। छोटी-छोटी बातों के लिए सोचना नहीं पड़ता। वर्ष में सारे धनावंशी एक जगह इकट्ठे होते। मिल बैठकर चिंतन करते--योजनाएं बनाते।

* महासभा तो पूरे समाज की आवश्यकता है और समाज उन्नति का द्वार है। इसमें जितनी-जितनी देरी उतना-उतना नुकसान।
* महासभा को व्यक्तिगत रंजिश--खुनस--अलगाव से दूर रखा जाए।
* महासभा अभी नहीं बननी चाहिए--यह कहने के लिए कोई तर्क गढना-समाज हित में नहीं है।
* महासभा के लिए कोई जमीन--रूपया--अपना मन और तन खुशी-खुशी लगा सकता है-इसमें कोई प्रतिबंध नहीं होता।
* महासभा क्या होती है और उसकी कार्य पद्धति किस प्रकार की होती है--इसे जानने के लिए समाज के

निरंतर सफलता हमें संसार का केवल एक ही भाग दिखाती है,
विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है।

गंभीर लोगों को दूसरे समाज की महासभाओं का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

* व्यक्ति आते हैं जाते हैं। महासभाएं स्थिर रहती हैं। पीढियों तक काम करती हैं । महासभा को गंभीर लोग चलाते हैं। कोई कूद कर दस लोगों को ले आया और कब्जा कर लिया ऐसा नहीं होता।
* महासभा के निर्माण से समाज को हर्षित होना चाहिए। न कि उसको व्यक्तिगत टसल का माध्यम बनाना चाहिए।
* महासभा का दफ्तर कहां हो-- यह कोई अधिक मायने नहीं रखता। काम करने वाले व्यक्ति सुन्दर और रचनात्मक सोचवाले तथा सक्रिय व्यक्ति हों। समाज में उनकी इज्जतपूर्ण स्थिति होनी चाहिए।
* महासभा के मुद्दे पर सबको एकल होकर काम करना चाहिए। इसमें नकार का भाव तो किसी का नहीं होना चाहिए। महासभा तो समाज की संरक्षक होती है। व्यर्थ विवादों पर लगाम लगाने का काम करती है। समाज के रचनात्मक कामों को आगे बढाती है।
* महासभा नहीं बननी चाहिए--ऐसा भाव तो किसी अल्प समझवाले व्यक्ति को भी नहीं रखना चाहिए।
* महासभा समाज की बड़ी जरूरतों में से एक है।
* जिन समाजों की महासभाएं नहीं होतीं- वे बांगरू जातियां कहलाती हैं ।
* बीस से अधिक वैष्णव पंथ हैं--एक धनावंश को छोड़कर बाकी सबकी महासभाएं हैं--यह कमी हमारे लिए क्या नीचे झांकने के लिए पर्याप्त नहीं है?

घनश्याम स्वामी, श्रीडूंगरगढ़ के विचार

महासभा किसी भी पंथ या समाज की गार्जियन होती है। जिस प्रकार बिना गार्जियन के परिवार बिखरा हुआ रहता है, उसी प्रकार समाज की स्थिति भी होती है। यदि जैन समाज,माहेश्वरी समाज या अन्य समाजों की तरह धनावंशी महासभा का निर्माण हो जाए तो समाज में भ्रम फैलाने वाले लोगों पर अंकुश लगाया जा सकता है। क्योंकि महासभा का एक संविधान होता है, जिसमें सख्त और सार्वजनिक निर्णय संपूर्ण समाज के मानस के हिसाब से लिए जाते हैं। जिन समाजों में महासभाएं में बनी हुई हैं, उन समाजों ने पिछले दिनों कई ऐसे निर्णय लिए हैं जिस पर विरोधाभास था, लेकिन महासभा द्वारा पारित किए जाने के बाद सब को लागू करना पड़ा। उदाहरण के लिए ब्राह्मण समाज जिन्होंने अभी-अभी मृत्युभोज को पूर्ण रूप से बंद कर दिया है। महासभा समाज के लिए सरकार की तरह होती है, जो निर्णय महासभा लागू कर दे, उस निर्णय को समाज में लागू न करने का साहस शायद कोई ही कर सके और यदि कोई ऐसा करे तो सभा उसके साथ कठोरतापूर्वक निर्णय भी ले सकती है। समाज से निष्कासन तक किया जा सकता है। इसलिए हर परिवार के लिए जैसे एक गार्जियन होता है उसी प्रकार हर समाज में महासभा का निर्माण अति आवश्यक है। महासभा के विषय को लेकर समाज में एक राय बननी चाहिए और जल्द से जल्द इस पर निर्णय हो ताकि समाज में हो रहे बिखराव को कुछ हद तक रोका जाए।

जहाँ प्रयत्नों की ऊँचाई अधिक होती है, वहाँ किस्मत को भी झुकना पड़ता है।

श्री अशोक सींवर, शेरेरा के विचार

मानव एक सामाजिक प्राणी है। एक-एक व्यक्ति से समाज बनता है, समाज किनी न किनी नियमों में बंधा होता है और ये नियम समाज के श्रेष्ठ लोगों द्वारा बनाए गए आध्यात्मिक, धार्मिक और नीतिगत मार्ग का ही रूप होते हैं। इसी प्रकार संत धनाजी के बताए गए पथ पर चलने वाले धनावंशी हैं। आज धनावंशी स्वामी समाज पूर्णत: संगठित न होकर भिन्न-भिन्न जाजम पर विराजित है।

भगवान श्रीकृष्ण और भक्त धनाजी ने भी अपने उपदेशों में बताया है कि संघे शक्ति युगे युगे। अत: आज धनावंशी स्वामी समाज को एक मंच पर आने की परम आवश्यकता है और इस के तहत एक धनावंशी स्वामी माहसभा का गठन किया जाना चाहिए ताकि समाज संगठित रहे, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक लाभ प्राप्त कर सके। यदि धन्नावंशी महासभा का गठन होता है तो महासभा द्वारा विभिन्न प्रकार के समाज विकास कार्य के साथ ही-

◆ समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करना होगा । ◆ धनाजी महाराज का मन्दिर निर्माण करना है।

◆ धनाजी के साहित्य की जानकारी समाज बन्धुओं तक पहुंचाना है।

◆ सम्पूर्ण धनावंशी स्वामी समाज को एक जाजम पर बिठाना है।

◆ समाज के प्रबुद्धजनों द्वारा समय-समय पर युवा पीढ़ी को चरित्र निर्माण पर व्याख्यान देना एवम विभिन्न केरियर गाइडेन्स के कार्यक्रम आयोजित करना आदि कार्य समाज हित में हो सकेंगे।

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानता।

देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।

अर्थात कदम से कदम मिलाकर चलो , स्वर में स्वर मिला कर बोलो , तुम्हारे मनों मे समाज बोध हो। पूर्व कालमें जैसे देवों ने अपना भाग प्राप्त किया , सम्मिलित बुद्धि से कार्य करने वाले उसी प्रकार अपना ङ्क अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।

श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली के विचार

किसी भी समाज में गुरु के प्रति दो मत, मेरी जहां तक जानकारी है, नहीं मिलेगा। समाज बन्धुओं को समाज की एकता-अखंडता को जिन्दा रखना है तो व्यक्तिगत मतभेदों को भुलाकर एक जाजम- एक झंडे के नीचे आना ही होगा। इसी में अपनी और अपने परिवार समाज की भलाई है। इसी से समाज के उत्थान व भलाई का मनसुबा पूरा हो सकता है।

समाज की महासभा आज नहीं तो कल बनानी अति आवश्यक है। इसके अभाव में आनेवाली पीढ़ी को क्या सन्देश जायेगा। यह तो श्री ठाकुरजी ही जाने क्या होने वाला है। किस मंशा से उल्टे-सीधे व्यक्तव्यों से

जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरुरत है, डिग्री की नहीं।

भाषणबाजी कर रहे हैं। किसी भाई की किसी से व्यक्तिगत टसल है, तो वह महानुभाव पूरे जाति समाज के गुरू को भी नहीं मानने से परहेज़ कर बैठते हैं। ऐसा ही पढ़ने को मिल रहा है, जबकि पीढ़ियों से मानते आ रहे हैं। हकीकत है। वो ही तो कुछेक को छोड़कर पूरा समाज मानता आ रहा है। किसी के द्वारा जबरदस्ती थोपी गई नहीं है। उनके पास कोई तथ्य प्रमाण नहीं है। मेरे साथी के पास कोई जाति धर्म का ग्रन्थ नहीं। जानकारी के नाम पर शून्य तो फिर किस बात का विरोधाभास? सभी समाज बन्धुओं को एक जाजम पर आकर महासभा बनाई जानी चाहिए। जिससे समाज की उन्नति निश्चित रूप से होगी। हमने जिस जाति धर्म में जन्म लिया है मामूली नहीं है। पीछे धकेलने में अपनी सभी की भागीदारी रही है। तभी तो अपने समाज की कोई सुन नहीं रहा है।

श्री प्रेमदास स्वामी, झाड़ेली के विचार

धनावंशी महासभा की स्थापना बहुत साल पहले हो जानी चाहिए थी, लेकिन जो नहीं हुआ उस पर ना जाकर अब तो हम इस काम को आगे बढ़ा सकते हैं।

मेरे विचार से धनावंशी महासभा क्यों जरूरी है?

* आज की तारीख में हर जिले या तहसील स्तर पर छोटी- मोटी संस्थायें हैं,लेकिन वो एक क्षेत्र तक ही सीमित हैं। लोगों को यह भी पता नही होता कि इस जिले के बाहर भी धनावंशी हैं । इस संस्था के माध्यम से सारे धनावंशी आपस में जुड़ेंगे एवम यह भी पता रहेगा कि हम कितनी संख्या में है एवम कहां कहां फैले हुए हैं?
* इस संस्था के माध्यम से एक विश्वसनीय एवम तर्कपूर्ण इतिहास की रचना एवम अपने पूर्वजों की गौरव गाथा , हमारे रीति रिवाज जो कि आज भी समाज को एक सूत्र मे बांधने में महत्वपूर्ण है, उनको सब तक पहुंचाना। बिना रीति रिवाज व नियमों के समाज जुड़ा हुआ नहीं रह सकता।
* यह एक केंद्रीय संस्था हो एवं क्षेत्रीय संस्थाएं इसके मार्ग दर्शन में काम करे।
* जब तक कोई संस्था के पास अधिकार नहीं हो तब तक उस समाज को कोई इज्जत नही देता। हमे इस संस्था को इतना मजबूत व प्रसिद्ध बनाना होगा कि इसके ध्वज के नीचे हर कोई इसके नियमों का पालन करें एवम हम सब धनावंशी इस संस्था से जुड़ने पर गौरवशाली महसूस करें ।
* इसके अलावा बाकी सारे कार्य जो एक संस्था के माध्यम से किये जा सकते हैं वो तो इस संस्था की स्थापना के बाद जरूर आगे बढ़ेंगे जैसे कि –शिक्षा, महिलाओं की भागीदारी, कुरीतियां हटाना, मंदिरों का उद्धार।
* किसी भी काम के लिए 100त्न लोगों का साथ नहीं होता। हमारे यंहा टांग खिंचाई में ज्यादा माहिर हैं लोग। लेकिन सबको यदि साथ लेकर चला जा सके उससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता।

एक सत्य यह भी है कि भगवान मंदिरों से ज्यादा हॉस्पिटल में याद किया जाता है।

श्री बृजदास स्वामी, गुसांईसर के विचार

प्रचलित कहावत है कि संगठन में शक्ति। हालांकि यह पूर्ण सत्य नही है इसलिये यह कहा जा सकता है कि संगठन में शक्ति तभी होती है जब संगठन का उद्देश्य, विचारधारा, कार्यप्रणाली आदि में एकरूपता हो । अन्यथा नाम के संगठन बहुत हैं, परन्तु एकरूपता के अभाव में उनकी खास उपयोगिता नहीं है।

क्या धनावंसी महसभा की आवश्यकता है ? यह सवाल जितना सरल है, उतना ही उलझा हुआ है। फिर भी जवाब लाजमी है इसलिए यथास्थिति उजागर करने का प्रयत्न करूंगा।

यदि मैं कितनी भी स्पस्ट और बेबाक बात करूं तब भी यही जवाब है कि संगठन होना अच्छी बात है पर नहीं भी हो तो कोई बुराई नहीं। आगे जो मैं लिख रहा हूँ वह मेरे निजी विचार और संगठनों के बारे में निजी अनुभवों पर आधारित है । धनावंशी महासभा का गठन बहुत ही उत्कृष्ट विचार है, लेकिन बिना सीढ़ी के ही सातवीं मंजिल पर चढ़ने जैसा है, मजबूत बुनियाद के बिना भव्य इमारत का निर्माण सम्भव नहीं। इसलिये पहले नींव मजबूत हो। पहले हम इस बात पर तो एक राय हो लें कि हम धनावंशी क्यों हैं, कैसे हुए, हमारे आराध्य कौन, हमारे जीवन में धनाजी का क्या महत्व है और क्या उनकी स्वीकार्यता के बिना जीवन सफल है? जब इन बातों में अधिकांश लोग एकमत हो जायें तब आगे की यात्रा आरम्भ करें। अभी विरोधाभास बहुत है।

सामाजिक संगठन से फायदे भले सीमित हो पर नकारा नहीं जा सकता, निसन्देह संगठन समाज हित में है, लेकिन परिस्थितियों पर निर्भर है। पेड़ लगाने से पहले जमीन की प्रकृति भी देखनी पड़ती है कि वह उपजाऊ है या नहीं।

श्री छगन स्वामी, पाली के विचार

नींव मजबूती व सुदृढ़ता का आधार होती है। समाज की मजबूती उसके संगठन पर निर्भर है। धनावंशी स्वामी समाज पहले के मुकाबले आज आर्थिक रूप से सम्पन्न है, ज्ञानी, दानी है। शिक्षित है, बुद्धिमानी है, मिलनसार व मेहनती भी है। फिर भी समाज दिन-ब-दिन पिछड़ता जा रहा है, अपनी पहचान को, अपने गौरव को खोता जा रहा है, क्यो ?

इस प्रश्न का उत्तर गहराई में जाकर सोचने पर मेरे अन्त:करण से जवाब मिला कि सर्वरूप व गुण से सम्पन्न होने पर भी पिछड़ने का कारण एकता व संगठन का समाज में अभाव है। एकता से बढ़कर कोई शक्ति नहीं है। एकता ही समाज के उत्थान का आधार है। जो समाज संगठित होगा, एकता के सूत्र में बंधा होगा। उसकी प्रगति को कोई रोक नहीं सकता। ये तभी संभव है जब धनावंशी स्वामी समाज का एक केन्द्रीय स्थल हो, महासभा हो, संगठन हो। जहां संगठन न हो वहां समाज प्रगति नहीं कर सकता। और न ही समृद्धि प्राप्त कर अपने सम्मान व गौरव को कायम रख सकता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अपना धनावंशी स्वामी समाज है। हम समाज बंधु न तो एक दूसरे के विचारों से पूर्णत: सहमत होते है और न ही एक दूसरे की प्रगति में योगदान देते है। एकता कुछ लोगों के जुड़ने से नहीं बल्कि समाज के अधिकांशत: व्यक्तियों के जुड़ने व सहमति से बनती है। पूरे समाज को एकता की माला में बांधा जाना तभी संभव है जब धनावंशी समाज की एक महासभा या केन्द्रीय

सत्य परेशान हो सकता है, मगर पराजित कभी नहीं होगा।

संस्था हो। समाज के संगठन का दूसरा मुख्य, काम समाज बंधुओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, आर्थिक प्रगति के लिए संगठन सहयोगी के रूप में कार्य करें। इस कार्य हेतु उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो महासभा द्वारा ही संभव है।

महासभा होना ही पर्याप्त नहीं होगा, इसका मजबूत होना अत्यावश्यक है कि महासभा द्वारा लिये गये निर्णय सर्वमान्य है। अन्यथा इसका कोई औचित्य नहीं होगा। ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जाए जिसमें पदाधिकारी व संगठन समाज की प्रगति के काम आ सके। धनावंशी स्वामी समाज की महासभा होने सही समाज के हर सदस्य समाज से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार के साथ चर्चा एवं विचारों के आदान–प्रदान का अवसर प्राप्त होगा। इससे समाज में व्याप्त विषमताओं को हम सकारात्मक एवं रचनात्मक तौर–तरीकों से समाधान कर सकते है। महासभा होने से एक अपनी सामाजिक एकता का प्रदर्शन करने के साथ धनावंशी समाज की उपलब्धियों पर भी विस्तार के साथ चर्चा कर सकते है।

श्री प्रेमदास स्वामी, खिंयाला के विचार

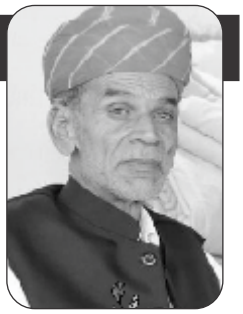

धनावंशी स्वामी समाज की महासभा बने या ना बने इस विषय में मैं कुछ भी नहीं लिखना चाहता हूं। मेरा मानना है कि एकमत और संगठित समाज ही महासभा बना सकता है। हमारा समाज एकमत और संगठित नहीं है। हमारा समाज विभिन्न गुटों में बंटा हुआ है। ऐसा समाज कभी महासभा नहीं बना सकता। अगर येन केन प्रकेरण तीन अलग–अलग विचारधारा वाले गुटों के लोगों द्वारा महासभा बन भी जाती है तो मेरा मानना है कि ऐसी महासभा के द्वारा कभी भी समाज का भला नहीं हो सकता। क्योंकि महासभा में तीनों ही गुटों के लोग सम्मिलित होंगे। ऐसी महासभा एकमत होकर कभी भी समाज हितेषी आदेश पारित नहीं कर सकती।

समय परिवर्तन के चलते सभी जातियों ने अपनी–अपनी जातीय महासभा का गठन किया है। किसी भी समाज या जाति के सर्वांगीण उन्नति और विकास में सदा से ही जाति महासभा का उल्लेखनीय योगदान रहा है। महासभा समाज की संरक्षक होती है। समाज को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्य कई विषयों के बारे में जागरूकता प्रदान करती है। हर समस्याओं के निस्तारण एवं अपने हक अधिकार के लिए समाज का नेतृत्व करती है।

जिनकी भी जातीय महासभाएं हैं, वे शुरू से ही अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव के झंडे तले या अपने नेता के झंडे तले संगठित रहे हैं। किसी भी समाज ने अपने पंथ प्रवर्तक गुरु एवं नेता को कभी भी विवादित नहीं माना। जातीय महासभाएं अपने–अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव के झंडे तले ही संगठित हैं। उनकी महासभा द्वारा समाज को यह नहीं कहना पड़ा की अमुक आदमी हमारा पंथ प्रवर्तक गुरु है। पूरे समाज को उन्हें अपने गुरु के रूप में मानना पड़ेगा उनका सम्मान करना पड़ेगा। उन्हें ऐसी समस्याओं से सामना नहीं करना पड़ा। अन्य जातियां शुरू से ही अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव के झंडे तले संगठित थी और हैं।

धनावंशियों को तो अभी तक यह भी पता नहीं है कि हमारा पंथ प्रवर्तक है कौन? और धनावंशी क्या होता है? जिस समाज को अपने होने का भी ज्ञान नहीं– ऐसे समाज की महासभा बनाया जाना मेरी बुद्धि से परे की बात है।

लोगों से डरना छोड़ दो, इज्जत ऊपरवाला देता है लोग नहीं।

श्री शिवलाल स्वामी, दौलतपुरा के विचार

धनावंसी स्वामी महासभा दरअसल एक ऐसी अवधारणा है, जिसके तहत विभिन्न पक्षों को साथ लेकर चलने, उनकी राय को अहमियत देने और एक साथ मिलकर सामाजिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आर्थिक-राजनीतिक और भौतिक विकास के विभिन्न लक्ष्य हासिल करने होते हैं । श्री धनावंशी स्वामी समाज के लिए समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, व्यसन और अन्धविश्वास से मुक्त वातावरण निर्माण तथा समाज सुधार व महिला शिक्षा की दिशा में उन्नयन के सकारात्मक प्रयास महासभा के माध्यम से किए जाएंगे। महासभा पंथ प्रेरक सन्त गुरु श्री धनाजी महाराज की साधपन की अवधारणा तथा सांस्कृतिक पहचान कायम करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

धनावंशी स्वामी महासभा में उदघोषणा के अनुसार लगभग भारत के सभी राज्यों से चयनित श्री धनावंशी स्वामी समाज के ही सदस्य होंगे। यह श्री धनावंशी स्वामी महासभा प्रत्येक व्यक्ति और समाज के प्रत्येक अंग के समाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं के प्रति सम्मान जागृत करेगी और अधिकारों की क्षेत्रीय एवं देश व्यापी प्रभावी मान्यता और उनके अनुपालना को सुनिश्चित करने का प्रयास करेगी। सामाजिक मानकों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करगी। अतः सामाजिक अनुशासन, शान्ति बनाए रखने, अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर श्री धनावंशी स्वामी समाज की सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाने, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास में सहायता करने हेतु इसकी उपादेयता असंदिग्ध है।

आज की परिस्थितियां प्राचीन काल से बहुत कुछ बदल गई हैं, हर समाज को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए एक विधि सम्मत संस्था की जरूरत होती है, जिसके माध्यम से अपने अधिकारों के लिए समाज के लोगों को जागरूक कर सकें और सरकार तक अपने समाज के जन-जन की आवाज को पहुंचाया जा सके। श्री धनावंशी स्वामी महासभा समाज को अनुशासित आध्यात्मिक अवधारणा की प्राप्ति के लिए एक मानक रूप उपस्थित करने का प्रयास करेगी, ऐसी उम्मीद है ।

श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़ के विचार

धनावंशी स्वामी महासभा की समाज हित में बहुत बड़ी आवश्यकता है।हमारा समाज छोटा सा है, कई अलग अलग स्थानों पर दूर दराज गांवों और शहरों में रहते हैं।हमारे समाज के अधिकांश लोग इसे अच्छी स्थिति में देखना चाहते हैं। समाज के प्रति कुछ करने का भाव रखते हैं। हमारे कुछ भाइयों का मानना है कि समाज आर्थिक रूप से मजबूत होना चाहिए। कुछ शिक्षा पर बल देना चाहते हैं।सबको अपना परिवार अच्छा लगता है। सभी अपने परिवार का भला चाहते हैं। परंतु जब तक एक साथ बैठेंगे नहीं। एक दूसरे को जानेंगे नहीं,तब तक केवल मन में चाहने से क्या होगा? वास्तव में सुधार तभी सम्भव है- जब लोग एक दूसरे के सहयोगी बनें। जब तक यह पता नहीं किससे मिलना है? कहां रुकना है, कैसे कोई किसी की सहायता कर सकता है। जब एक संस्थान होगा तो उसमे सब तरह की व्यवस्था होंगी।लोग अपनी जिम्मेदारी लेंगे। इसलिए महासभा

आत्मविश्वास में पैदल चलना, संदेह में दौड़ने से कहीं बेहतर है।

का होना बहुत ज़रूरी है।इसके माध्यम से समाज की हर स्थिति की सबको जानकारी हो पाएगी। लोग एक दूसरे को अच्छे से समझ पाएंगे। रिश्ते बनाने में मदद मिलेगी। रिश्तों को निभाने पर बल दिया जाएगा।अलग अलग व्यवस्थाएं हो सकेंगी। जिससे समाज के युवाओं को शिक्षा में सहयोग मिल पाएगा।संस्था होने से गरीब परिवारों को स्वास्थ्य के लिए सहायता मिल पाएगी। समाज में कितनी कुरीतियां फैली है, उनके निवारण हेतु ,नई दिशा और दशा हेतु,समाज में शैक्षणिक और आर्थिक विकास हेतु महासभा का होना बहुत आवश्यक है। जब तक हम एक जगह पर बैठेंगे नहीं,एक दूसरे को समझेंगे नहीं तो कैसे हम अपने आपसी मतभेद को दूर कर पाएंगे? यदि इसी प्रकार चलता रहा तो समाज बिखर जाएगा। सामाजिक मर्यादा और सामाजिक सामंजस्य नष्ट होने की ओर जा रहा है। समाज के कुछ लोग सर्व स्वामी समाज के रास्ते को अपना रहे हैं। अपने रिश्ते अन्य समाज में करने लगे हैं। क्यों ना करें? अपने समाज में कोई तो हो, जो एक दूजे को जोड़ कर रख सके। पहले सबने गुरु और उनकी शिक्षाओं को भुलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर महंत द्वारों की स्थिति बिगड़ गई। धीरे धीरे धनावंशी परम्पराओं का समापन होने को है। यह अनियंत्रित स्थिति है। इसकी दिशा सही नहीं दिख रही। अभी भी समय है सबके एक होने का । सबके एक स्थान पर बैठने का।समाज हित में अतिशीघ्र कदम उठाने की जरूरत है। समाज को जागृत करने की बहुत आवश्कता है। सबको मिलकर आगे बढ़ना होगा। एक आदर्श और सुसंगठित महासभा का निर्माण करना होगा। जल्द से जल्द समाज को सही दिशा की ओर अग्रसर करने की कोशिश करनी होगी। यदि हम ऐसा कर पाते हैं, तो हमारा समाज शीघ्र ही आगे बढ पाएगा। हमारा गौरव पूर्ण इतिहास लिखा जाना चाहिए। आने वाली पीढ़ी को किसी भी प्रकार के मतभेदों से दूर रखना है। समाज की एकता और अखंडता के लिए महासभा का गठन बहुत आवश्यक है।

श्री राधेश्याम स्वामी, नागौर के विचार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के बिना उसका अस्तित्व अंतरिक्ष के अनंत शून्य में विलीन उस कण के समान होता है, जिसकी न कोई दिशा होती है और न कोई पथ। सृष्टि के आरंभ में जब मानव सभ्यता विकसित हुई तब से व्यक्ति प्रकृति एवं परिवेश से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है।इस प्रकार वह सभ्यता में कुछ न कुछ नया जोड़ने का सार्थक प्रयास करता रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में मानव में अनुशासन, प्रगतिवादी सोच, एवं सुनहरे भविष्य के बेहतरीन निर्माण के लिए सामाजिक अंकुश एवं अनुशासन आवश्यक होता है। यह अंकुश और अनुशासन एक सक्षम, समृद्ध सामाजिक संस्था के द्वारा ही कायम किया जा सकता है। बिना अनुशासन के मनुष्य की गति उसी प्रकार होती है, जैसे डोर से कटने के बाद पतंग की होती है। आज के युग में विभिन्न समाज के सक्षम व्यक्तित्यों द्वारा अपने समाज की परंपराओं एवं नियमों की पालना के लिए विभिन्न स्तर पर सामाजिक संगठन स्थापित किए गए हैं और इन्हीं संगठनों के माध्यम से उन्होंने अपने समाज का राजनीतिक ,सामाजिक, धार्मिक ,आर्थिक वर्चस्व विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित किया है। बिना सक्षम सामाजिक संगठन के किसी भी समाज की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर नहीं हो पाती और जिस समाज की पहचान स्थापित नहीं हो पाती उस उस समाज के व्यक्तियों को हर क्षेत्र में हर जगह नित्य नई कठिनाइयों का सामना करना

सुखी होने के चक्कर में, जो पूरी जिंदगी दु:खी रहता है, उसी का नाम इंसान है।

पड़ता है। इसलिए मेरा यह व्यक्तिगत मत है कि धार्मिक संप्रदाय के रूप में स्थापित हमारे समाज में पुरातन काल से महंत प्रथा के द्वारा सामाजिक संगठन संचालित किये जाते रहे हैं एवं उस बेहतरीन प्रथा से समाज में एक अदृश्य लेकिन प्रभावशाली अंकुश रहा था। उसी का प्रभाव है कि आज भी हमारा समाज विभिन्न विनाशकारी व्यसनों से दूर है। अत: वर्तमान परिस्थितियों की आवश्यकता को मध्य नजर रखते हुए श्री धनावंशी स्वामी समाज का भी राष्ट्रीय स्तर पर एक संगठन महासभा के रूप में गठित किया जाए। यह महासभा समाज की दिशा और दशा बदलने में मील का पत्थर साबित हो सके। समाज का राजस्थान स्तर पर संगठन बनाने के लिए मेरा यह व्यक्तिगत सुझाव है कि सर्वप्रथम बड़े स्तर पर बड़ा संगठन बनाने की बजाय छोटे स्तर पर राजस्थान के विभिन्न जिलों में सक्रिय एवं संचालित रजिस्टर्ड संगठन जिन का दायरा तहसील जिला या संभाग स्तर तक ही सीमित है उन संगठन के पदाधिकारियों की एक सामूहिक बैठक आयोजित की जावे एवं उस बैठक में राजस्थान स्तर की अस्थाई कार्यकारी महासभा का गठन कर लिया जावे, तत्पश्चात अनुकूल परिस्थितियों के अनुरूप महासभा गठन हेतु राजस्थान पंजाब हरियाणा के जागरूक इच्छुक एवं सक्रिय साथियों को मिलाकर तथा हर जिले ,हर तहसील का उचित प्रतिनिधित्व करते हुए वृहद स्तर पर महासभा का गठन कर समाज की एक नई पहचान कायम करने के लिए सभी को सामूहिक सार्थक प्रयास करना चाहिए। बिना सामूहिक प्रयास के एवं सामाजिकता की सोच के सामाजिक संगठन बनाना अत्यंत कठिन कार्य है, फिर भी बिना संगठन के हमारा अस्तित्व देश और दुनिया में सदैव नगण्य बना रहेगा और इसके लिए आने वाली हमारी पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेगी।

तर्ज – हुस्न पहाड़ों का

शीर्षक

गुरूदेव धन्ना जी का भगत सब हिल मिलके हम वन्दन करते हैं ।
वन्दन करते हैं गुरूजी का अभिनन्दन करते हैं ।।

1. सुख के सागर ज्ञान के दाता। दीन अनाथ के तुम पितु माता। तुम से बडा ना कोई और विधाता।।
   तुम विष्णु युगल भुज के, प्रकट इस नर तन में,शिव आप विचरते हैं ।।
2. तुम करूणा निधि अंतर्यामी। दीन अनाथ के तुम हो स्वामी ।बारंबार नमामी नमामी।।
   सर्वव्यापक हो जग में,जहां भी तेरा करें सुमिरन,सब कारज सरते हैं ।।
3. तुम परमेश्वर अंतर नाहीं। तीनहूं लोक चतुर्दश माहीं। हरि दरषत गुरू की परिछाहीं ।।
   कभि रूठ ना जाये गुरूदेव,गुरू के बिना कोई ना तेरा,भगवान सुमिरते हैं ।।
4. अवगुण मेरा ना तनिक निहारो। बांह पकङकर तुरत उबारो। डूबत जाय रह्यो मझधारो ।।
   रखवैया खेवैया हो तुम,दया की एक नजर भर से,भव सागर तरते हैं ।।
5. घट घट चेतन ज्योति जलाओ। परमारथ का पथ दिखलाओ। प्रेमामृत जल सबको पिलाओ।।
   छूटे सकल अभिमान,हिरदै में थारा ध्यान धरें,गरीब दास उचरते हैं ।।

अगर भगवान ने बुरा वक्त नहीं बनाया होता तो,
अपनों में छुपे हुए गैर और गैरों में छुपे हुए अपने कभी नजर नहीं आते।

आपके पत्र–आपकी भावनाएं

यह था सप्तम अंक

श्री धनावंशी हित मासिक पत्रिका के दो अंक मई व जून के कल श्री धनावंशी हित ग्रुप में श्री चेतनदास जी द्वारा शेयर किए गए। काफी लंबे इन्तजार के बाद दोनों अंक पढ़ कर अपार खुशी की अनुभूति हुई। और ऐसा लगा कि श्रीचेतनदास जी द्वारा समाज के विकास व उत्थान की दिशा में किए जा रहे प्रयास जरूर सफल होंगे। हर समाज की अपनी एक पत्रिका होती है, वैसे ही हमारे धनावंशी समाज की भी मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है तो इससे हम बहुत गर्व महसूस करते हैं। इस बार मई के अंक में जिन धनावंशी भाइयों ने कोरोना वॉरियर बनकर देश वह समाज हित में जो योगदान दिया उनके बारे में पढ़कर बहुत खुशी की अनुभति हुई। साथ ही चेतन दासजी द्वारा किया गया अनुरोध हमें धनावंशी ही रहना चाहते हैं–पढ़कर अच्छा लगा तथा धनवंश की प्रगति में नारी शक्ति के योगदान पर लिखे लेख सुमन स्वामी, सीताजी स्वामी, के द्वारा बहुत अच्छे लगे। इसके साथ ही धनावंशी नारी के प्रश्नों के विशद परिचर्चा में भाग लेने वाली धनावंशी नारी सुमन स्वामी , वीणा जी स्वामी , चेतना जी स्वामी,अंजू जी स्वामी , कमला जी स्वामी सीता जी स्वामी, डॉक्टर उमेश जी स्वामी के विचार पढ़कर बहुत गर्व महसूस हुआ तथा धनावंश में नारी की उन्नति पर लिखे गए आलेख ब्रजदास जी स्वामी, कप्तान सेवानिवृत्त रघुनाथ प्रसाद जी स्वामी के विचार भी बहुत सराहनीय हैं ।श्री धनावंशी हित पत्रिका के प्रकाशन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले संपादक एवं प्रकाशक श्री चेतन दास जी को मेरा बारम्बार नमस्कार एवं प्रणाम जो धनावंशी हित में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

-छगन स्वामी पाली

आपने पत्रिका के जून अंक की पीडीएफ भेज कर बहुत बढ़िया काम किया है। हमें पत्रिका मिल गई, पढ़ भी लिया और सब जगह शेयर भी कर दिया। अब तक लगभग हजारों समाज बंधु समाज की पत्रिका पढ़ चुके होंगे। पीडीएफ के माध्यम से यह पत्रिका पूरे समाज तक पहुंच जाएगी। आदरणीय पत्रिका की पीडीएफ भेजने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

-प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

पत्रिका की पीडीएफ फाइल मिली है, जो कि अपने समाज की पत्रिका है। सभी सदस्यों से निवेदन है कि यह पीडीएफ फाइल खोलकर सभी समाज बंधु इन पत्रिकाओं को जरूर पढ़ें। समाज की पत्रिका है समाज की ही सब सामग्री है इसमें। नारी अंक बहुत ही अच्छा है और समाज के बारे में काफी कुछ लिखा है। सब से विशेष आग्रह है,सभी समाज बंधु पत्रिका को जरूर पढ़ें।

-बस्तीराम स्वामी, मेड़तासिटी

उन्नति की क्षमता रखने वालों पर ही समय समय पर आपत्ति आती है।

आदणीय चेतनजी आपको मैं हृदय से प्रणाम करता हूं। आप सही मायने में धनावंशी समाज के शुभचिन्तक हैं। बरसों पहले से मैं विचार करता था कि मेरे धनावंशी समाज की भी पत्रिका निकलनी चाहिए। मेरा सौभाग्य है कि मेरी मुलाकात आपसे हुई और हमने ये सपना देखा और इस सपने को पूरा करने का जिम्मा उठाया। हमारे समाज बंधुओं ने आप सब की सहायता से इस सपने को पूरा किया- चेतन जी ने। उनका जितना आभार व्यक्त किया जाय उतना कम है। उनके प्रयास की हम सभी दिल से सराहना करते हैं। धनावंशी नारी अंक निकाल कर ये साबित कर दिया कि उन्हें सचमुच में धनावंशी समाज से प्यार है। मैं चेतनजी को उनकी इतनी सुंदर विचारधारा के लिए प्रणाम करता हूं।

-रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद

श्री धनावंशी हित मासिक पत्रिका के मई और जून के दोनों अंक पीडीएफ स्वरूप में अत्यंत रोचक और सारगर्भित हैं। डॉक्टर चेतन दास जी को बहुत बहुत- बहुत धन्यवाद।

-जगदीशप्रसाद स्वामी, हरियासर

आज श्री धनावंशी हित पत्रिका पीडीएफ के माध्यम से पढ़ी। अच्छा अंक है। विशेष कर नारी उत्थान पर प्रकाश डाला गया है। समय बदलेगा मूल कॉपी भी मिलेगी। इसी आशा के साथ.....पत्रिका का कार्य शानदार।

-दुर्गाराम स्वामी, नाथवाणा

अपने धनावंशी समाज से अच्छा तो नाई समाज है जो कि अपनी दुकान, कारोबार की जगह अपने गुरुजी सेनजी महाराज की फोटो लगाते हैं। डॉक्टर साहब चेतनजी बहुत बढ़िया काम कर रहे हैं। अगर हम सभी उनका साथ नहीं दे सकते तो उनको परेशान तो नहीं करें।

-भींवदास स्वामी, छपारा, हाल-डीडवाना

धनावंशी हित के मई एवं जून के अंक पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। बहुत से समाज बन्धुओं ने अपने समाज के उत्थान के लिए सुंदर विचार रखे।उन सभी का हृदय से आभार। नारी विशेषांक बहुत ही अच्छा लगा। समाज की बहनों ने खुलकर अपनी बात कही। मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं। आदरणीय श्री चेतन जी ने महिलाओं को एक मंच दिया और उनको अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला। जितने भी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए उन् सभी में एक समानता है और वो है सिर्फ और सिर्फ समाज को संगठित करना, समाज में फैली कुरितियां को खत्म करना और नारी शक्ति को समाज के उत्थान के लिए आगे बढ़ने का अवसर दे ना। एक और बात उभर कर सामने आई कि हमारे गुरु श्री धनाजी महाराज हैं इसमें कोई संदेह नहीं है।

अब आप देखये कि समाज की पत्रिका के सिर्फ दो अंक जिन लोगों के पास पहुंचे और उन्होंने पढ़ा होगा तो अज्ञनता तो दूर हुई होगी। मैं ऐसा मानता हूं। अब सवाल यह है कि इस ऊर्जा को बढ़ावा कैसे दिया जाएऔर समाज के उत्थान के लिए इसका इस्तेमाल कैसे किया जाए ? अपने सभी के लिए यह एक विचारणीय प्रश्न है।

-हीरालाल स्वामी, राजसमंद

आपको श्रेय मिले ना मिले,
पर अपना श्रेष्ठ देना कभी बन्द ना करें।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) * मो.: 9461037562**

धर्म परायण भंवरीदेवी स्वामी नहीं रही

श्रीमती भंवरीदेवी स्वामी धर्मपत्नी श्री कानदास स्वामी निवासी धोलिया––लाडनूं का स्वर्गवास 2 अगस्त 2020 को हो गया। श्री धनावंशी हित पत्रिका चोयल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है तथा मृतात्मा को नमन करती है।

सुस्ती से उबरने का सरल तरीका यही है कि––आप अपने सम्पर्क के दस लोगों में धनावंशी चेतना भरने का भरसक प्रयास करो । वे जो भी जिज्ञासा रखते हैं, उसका समाधान करने की चेष्टा करो । हर व्यक्ति प्राण प्रण से दस दस लोगों को जोडता चले तो सुज्ञानी धनावंशीयों का समूह खडा होते देर कहां लगेगी । पर सच्चाई यह है कि इतना सा प्रयत्न करने के लिए हमारे पास समय कहां है ?

चतु:सम्प्रदाय में रामानंदी– वल्लभी–मध्व और निम्बार्क हैं। जिनके 52 द्वारे ही उनके बावन गौत्र हैं। वैसे वैष्णव पंथ बीस से अधिक हैं–जिनमें एक ही सम्प्रदाय में बीसों जातियां होती हैं, किन्तु धनावंश में ऐसा नहीं है। यह विशुद्ध रूप से जाट जाति से बना हुआ है––इसीलिए इसके सारे गौत्र आज भी जाटों वाले हैं और यही इसकी शुद्धता का प्रमाण है।

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

बुराई होना भी बहुत ही जरूरी है, क्योंकि हर रोज अगर तारीफ मिलेगी तो जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पायेंगे।

BHARTI NIKETAN SCHOOL, श्रीडूंगरगढ़ (BKN)
NEET व IIT के लिए गारण्टी बैच शुरू
बीकानेर जिले का नं. 1 व राजस्थान का टॉप स्कूल
कक्षा 11 वीं में NEET व IIT फाऊण्डेशन के लाईव बैच 1 अगस्त से शुरु ❖ टॉपर्स को टेबलेट फ्री ❖ 2 क्लास टॉपर्स की फीस फ्री कहीं से भी
राजस्थान बोर्ड के इतिहास में पहली बार
12वीं साईंस में हर पांचवा विद्यार्थी 90% से ऊपर
राजस्थान में 1st Merit के साथ
12TH SCIENCE 2020
10 में से 7 राज्य मैरिट
सभी LIVE Classroom
ROLL NO. 2547969 TO 2548161
रिकॉर्ड 6 विद्यार्थी 98% से ऊपर
रिकॉर्ड 39 विद्यार्थी 90% से ऊपर
कुल विद्यार्थी 193
छात्रवृत्ति : 90% से ऊपर, दो क्लास टॉपर्स के लिए फीस फ्री* व टॉपर्स के लिए टेबलेट फ्री*। | लड़के व लड़कियों के लिए अलग-अलग स्कूल व कॉलेज
(विशेष : सभी विद्यार्थियों के 10वीं की तुलना में 12वीं के अंको में 30 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी)
1st STATE MERIT
मैरिट के इच्छुक विद्यार्थी तुरन्त प्रवेश लें (मैरिट फैक्ट्री)
श्यामसुन्दर शर्मा
XII - 99.60%
498/500
(X-90.83%)
INTERACTIVE LIVE ONLINE CLASSES & ADMISSIONS CONTINUED
LIVE CLASS PLAY TO COLLEGE (SCI/COM/ARTS/AG)
BSTC, PTET, AIR FORCE, NAVY, ARMY
LIVE CLASSES
DOUBT REMOVAL SESSION
STUDY MATERIAL
TEST SERIES
LIVE PTM
6th STATE MERIT मो. साबीर Overall % 98.60%
7th STATE MERIT खुशी चौधरी Overall % 98.40%
8th STATE MERIT मधुसुदन Overall % 98.20%
9th STATE MERIT राकेश Overall % 98.00%
9th STATE MERIT विनोद तावणियां Overall % 98.00%
10th STATE MERIT अर्पिता चौधरी Overall % 97.80%
97.20% 97.20% 97.00% 96.80% 96.60% 96.00% 95.80% 93.60% 93.60% 93.60% 93.40%
93.40% 93.20% 93.20% 93.00% 92.60% 92.40% 92.20% 92.20% 91.80% 91.80% 91.60%
91.40% 91.20% 90.80% 90.60% 90.60% 90.40% 90.40% 90.20% 90.00% 90.00%
STATE MERIT 7
98% Above 6
95% Above 14
90% Above 39
80% Above 116
TOTAL STUDENTS 193
www.bhartiniketan.org | Karni Nagar, Sri Dungargarh | Helpline : 94144-17321, 9413265729 | bhartiniketanschool&College

आईये... आईये... बुकिंग करवाईये और चिन्ता से मुक्त होकर विवाह का आनन्द उठाईये

आपके अपने बीदासर शहर में सभी लोगों के लिए महानगरी जैसी सुविधाओं से युक्त अत्याधुनिक -

''राधाकृष्ण की हवेली''

बनाये अपने खुशियों के लम्हों को यादगार...

मैरिज पैलेस

विवाह शादी, सगाई, पार्टी, उत्सव, बर्थ - डे पार्टी, धार्मिक एवं सांस्कृति, कार्यक्रमों के लिए सर्वसुविधा युक्त पैलेस

सुविधाऐं :-

(1) AC / Non AC Rooms with Bath Room attach facilities
(2) CC TV द्वारा निगरानी
(3) महिलाओं के लिए लेडिज ब्यूटिसियन
(4) Wi-Fi facilities
(5) Pure R.O. Water 24 घंटे
(6) विवाह के लिए सभी प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध है।
(7) 7 चौडे रास्तों द्वारा बीदासर - नोखा हाईवे रोड से सीधा जुड़ाव
(8) Meeting and Conference Hall with Projector Facilit.

:- कार्यक्रम के लिए जगह :-

* 6500 Sqft में मैरिज गार्डन
* 7000 Sqft में बिना पिलर का हॉल (स्टेज डेकोरेशन सहित)
* 1000 Sqft में अत्याधुनिक किचन व्यवस्था
* 20000 Sqft में भागवत कथा व धार्मिक/ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए हॉल
* 45000 Sqft में CC TV कैमरा युक्त अलग से पार्किंग व्यवस्था

उतम व्यवस्था आकर्षक रेंट

मात्र 11000/- रूपये से बुकिंग शुरू

बुकिंग के लिए सम्पर्क करें :-

पदमदास स्वामी 9799951408, मुरलीधर स्वामी 9414895676, अशोक स्वामी 8769309299

नोखा - बीदासर हाईवे रोड, दुर्गा माता मन्दिर के सामने वाली गली, मेघ जी की बाड़ी बीदासर, जिला चूरू (राज.)

If Undelivered Return To

सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।